अंक–05 2022–23
Volume-05 Year 2022-23

विहान

विचारों की महाविद्यालय पत्रिका

पंचम संस्करण

सह–सम्पादक
अरूण कुमार

सम्पादक
प्राचार्य

CONTENT

1. Role of Education in Make in India	09-09
2. महिला उत्थान : एक विमर्श	10-12
3. Emergence of Hedge fund in India Implication on the Capital Market	13-15
4. मुगल काल में स्त्रियों की दशा का विशेषणात्मक अध्ययन	16-18
5. The Hypothesis	19-21
6. भारतीय संवैधानिक प्रावधान एवं महिला सशक्तिकरण में गैर सरकारी....	22-25
7. जीवन मूल्य व हिंदी साहित्य का अंर्तसंबंध	26-29
8. Dimensions of Socio Economic Development of Tribes	30-30
9. झारखण्ड की राजनीति क्षेत्रिय दलों की भूमिका.....	31-32
10. माँ	33-33.
11. सारे जहाँ से	34-34
12. गुजरे जमाने	35-35
13. जमीन पर जन्नत	36-36
14. आतंकवाद	37-37
15. मजबूत हौसला	38-38
16. Education	39-39
17. हौसला	40-40
18. Take your Troubles	41-41
19. जिंदगी	42-42
20. The Road Not taken	43-43
21. पृथ्वी की संधर्ष भरी कहानी	44-45

शासी निकाय के सदस्यों की सूची

1.	श्री विनोद कुमार सिंह	अध्यक्ष
2.	श्री मनोहर सिंह	सचिव
3.	डॉ० अनुज कुमार	गिरिडीह कॉलेज, गिरिडीह
4.	डॉ० संतोष कुमार लाल	प्राचार्य
5.	उपायुक्त (गिरिडीह)	सदस्य
6.	श्री राजेश कुमार जैन	दानदाता सदस्य
7.	श्री अरूण कुमार (अर्थशास्त्र विभाग)	शिक्षक प्रतिनिधि

आंतरिक गुणवता आश्वासन प्रकोष्ठ (I.Q.A.C.) के सदस्यों की सूची

1.	डॉ० संतोष कुमार लाल	प्राचार्य
2.	प्रो०(डॉ०) मन्टू कुमार सिंह	शिक्षाविद् सदस्य
3.	श्री नौशाद आलम	प्रशासनिक अधिकारी
4.	डॉ० राजेश कुमार सिंह	सामाजिक सदस्य
5.	श्री राजेश कुमार जैन	प्रबंध सदस्य
6.	श्री पंकज कुमार अग्रवाल	उद्योगपति सदस्य
7.	श्री सौरव अग्रवाल	पूर्ववर्ती छात्र सदस्य
8.	श्री अरूण कुमार (अर्थशास्त्र विभाग)	शिक्षक सदस्य
9.	श्री अरूण कुमार (रा० वि०)	शिक्षक सदस्य
10.	श्री प्रमोद कुमार	शिक्षक सदस्य
11.	श्री बैजनाथ मिस्त्री	शिक्षकेत्तर कर्मचारी सदस्य
12.	श्री राजीव सिंह	छात्र सदस्य
13.	श्री रविन्द्र कुमार मिश्रा	समन्वयक

सत्र 2019–22 के सर्वोच्च प्राप्तांक पाने वाले छात्र का नाम :–

1. रवि घोष (वाणिज्य)
2. सब्यसाची पाण्डे (अर्थशास्त्र प्रतिष्ठा)

अकादमिक सत्र 2022–23 में महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की सूची

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	संसाधन व्यक्ति का नाम	विभाग	आयोजनकर्ता
1.	Field Trip	24 / 07 / 2022	Dr. S.K.Lal, Arun Kumar	Commerce	Dr. S. K. Lal
2.	The Relevance of Gandhijee's Trath non-voilonce Theory	27 / 07 / 2022	सुरेन्द्र कुमार पूर्व प्राचार्य / विभागाध्यक्ष भद्रकाली कॉलेज, इटखोरी	Political Sc.	Arun kumar
3.	Career Counselling	05 / 08 / 2022	Prof. (Dr.) M.K.Singh	Commerce	Dr. S. K. Lal
4.	Seminar Kamkaji Mahila and Sanjukta Priwar	16 / 08 / 2022	Self	Sociology	Dr. Vinita Sinha
5.	Workshop Introduce use of Geography Lab equipment	29 / 08 / 2022	Self	Geography	Ashit Diwakar
6.	राजभाषा के रूप में हिन्दी	14 / 09 / 2022	Self	Hindi	R. Hazam
7.	Seminar on Cyber Defense Engineering	14 / 10 / 2022	Dr. Mamta Verma	Commerce	Dr. S. K. Lal
8.	Voter awareness program	16 / 11 / 2022	SDO Sri Kundan kumar	Commerce	Dr. S. K. Lal
9.	Blood Donation Camp	19 / 11 / 2022	SDPO Sri Noushad Alam	Commerce	Dr. S. K. Lal
10.	Road Safety weak	01 / 12 / 2022	SDPO Sri Noushad Alam	Commerce	Dr. S. K. Lal
11.	मानवधिकार दिवस की उपयोगिता	10 / 12 / 2022	विभागाध्यक्ष	Political Sc.	Arun kumar
12.	Seminar on Corruption	13 / 12 / 2022	Self	Sociology	Dr. Vinita Sinha
13.	Seminar Career conflicts and challenges in higher education	17 / 12 / 2022	Dr. Niraj Dang	English	R.K.Mishra
14.	Field Trip	23 / 12 / 2022	Self	Geography	Ashit Diwakar
15.	हिन्दी में रोजगार के अवसर	10 / 01 / 2023	Self	Hindi	R. Hazam
16.	Workshop on ABC	24 / 01 / 2023	Dr. S.K.Lal Principal	Economics	Arun kumar
17.	Udham Singh in Indian National Movement	18 / 04 / 2023	Self	History	K. P. Yadav
18.	Mugal Samrajay ka Patan	12 / 05 / 2023	Self	History	K. P. Yadav
19.	Seminar on NEP 2020	18 / 12 / 2023	Dr. B.K. Mishra Principal	Economics	Arun kumar

Dr. Ajit Kumar Sinha
Vice-Chancellor

VINOBA BHAVE UNIVERSITY
Hazaribag – 825301, Jharkhand, India

Phones : (O) 06546-264279
: (R) 06546-264066 / 262342
: (M) 7903327315/9470303568
Fax No. : 06546-267878
E-mail : sinhaajitkumar58@gmail.com
vc@vbu.ac.in

Ref. No.: VBU/VC/637/2023

Date: 05/07/2023

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि सरिया महाविद्यालय, सरिया द्वारा हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका **विहान** का प्रकाशन करने जा रहा है।

संस्थागत पत्रिका संस्था का दर्पण होता है जिसमें कल, आज और कल की गतिविधियों की जानकारी मिलती है।

मैं प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से कहना चाहूँगा कि वे छात्र–छात्राओं को और प्रोत्साहित करें जिससे उनकी शत–प्रतिशत सहभागिता सुनिश्चित हो।

मैं विश्वविद्यालय की ओर से सम्पादन समिति के सदस्यों को साधुवाद देता हूँ और पत्रिका का सतत प्रकाशन की हार्दिक शुभकामना देता हूँ।

(अजीत कुमार सिन्हा)
कुलपति

प्रो० (डॉ०) मिथिलेश कुमार सिंह
कुलानुशासक
Prof. (Dr.) Mithilesh Kumar Singh
Proctor

Vinoba Bhave University,
Hazaribag-825301

Email.- proctor@vbu.ac.in
onlymithilesh@gmail.com
Mob. No.-7463041969,
7488220675

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सरिया कॉलेज, सरिया की वार्षिक पत्रिका 'विहान' का प्रकाशन होने जा रहा है। किसी भी शिक्षण संस्थान की पत्रिका वहाँ के विद्यार्थियों व अध्यापकों की सृजनात्मकता की सम्यक अभिव्यक्ति की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मंच होती है। मुझे विश्वास है कि 'विहान' सृजनशीलता के नूतन सुबह का आगाज करते हुए विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के सूर्य की रश्मियाँ बिखेरेगी। इन रश्मियों से ही हमारे समाज, प्रदेश व राष्ट्र के विकास का पथ प्रशस्त होगा और भावी पीढ़ी में 'सॉफ्ट स्किल' व लेखन–कला का बीजारोपण भी संभव होगा। देश व समाज की दशा–दिशा का आकलन करने में लेखकों–कलाकारों ने बड़ी भूमिका निभाई है। मुझे उम्मीद है कि 'विहान' विद्यार्थियों को सक्षम लेखक बनाने में अहम योगदान करने में समर्थ होगी।

मैं 'विहान' के नये अंक के लिए इसके संपादक मंडल, प्राचार्य, महाविद्यालय प्रबंधन के लोगों तथा विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देते हुए अशेष शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(मिथिलेश कुमार सिंह)
कुलानुशासक

OFFICE OF THE SECRETARY/~~PRINCIPAL~~

Estd. : 1984

SARIYA COLLEGE, SURIYA

(Permanent Affiliated to V.B.U. Hazaribag)
NAAC accredited with 'C' 1.96 CGPA
Reg. U/S 2(f) & 12(B) of U.G.C. Act, 1956, New Delhi
Reg. Under Socities Registration Act 21, 1860
ISO 9001 : 2015 Certified

Ref. No. : .....

Date : .....

शुभकामना संदेश

अपार हर्ष हो रहा है कि सरिया कॉलेज, सरिया के द्वारा महाविद्यालय पत्रिका "विहान" पंचम अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं, एवं शिक्षकों के सृजनात्मक क्षमता को पंख देने में कामयाब होगा।

मैं अपनी ओर से "विहान" पत्रिका के संपादक मंडल को पंचम अंक के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ और कामना करता हूँ कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगी।

(मनोहर सिंह)
सचिव
सरिया कॉलेज, सरिया

Rly. Station - Hazaribagh Road
P.O.-Suriya-825320 Dist.-Giridih (Jharkhand)
06557-299928
sariyacollege1984@gmail.com
sariyacollege.ac.in

सम्पादकीय

सम्पादकीय ''विहान''का पंचम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। संपादक मंडल और प्रकाशन टीम का यही प्रयास है कि हर नये अंक के साथ इसकी गुणवत्ता में वृद्धि हो और पत्रिका प्रकाशन के उद्देश्य की पूर्ति हो सके। साहित्य समाज का आईना होता है और पत्रिका समय का पहिया जो भूत से सीख, वर्तमान को परख, भविष्य का रास्ता दिखाती है। हमने भी इस अंक के विषयवस्तु के केन्द्र में समकालीनता को ही रखा है। मकसद यह है कि समकालीन मुद्दों पर विद्यार्थियों, शिक्षकों के समझ को विकसित करना। इस दशक की शुरूआत कोविड–19 के प्रकोप के अंत से हुई है। विपदा के इस दौर ने हमें परिवार, समय एवं प्रकृति के महत्व को समझाया। साथ ही बाजार की वश में जीने वालों को भी यह सीख मिली कि मानव की वास्तविक जरूरतें काफी सीमित है, जिसकी आपूर्ति प्रकृति खुशी–खुशी करती आ रही है। बाकी चाह की पूर्ति तो दोहन से ही होती रही है। लेखकों ने जीवन, कार्य एवं राष्ट्र से जुड़े विचारणीय विषयों के बारीकियों को अलग–अलग नजरिये एवं विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में देखने की कोशिश की है। सरिया महाविद्यालय की प्रसिद्ध पत्रिका 'विहान ' के इस अंक (अंक–05, भाग 1, वर्ष 2022–23) जो विगत 4 वर्षो से सतत् रूप से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका में महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मौलिक विचारों के स्तरीय लेख प्रकाशित हुए हैं। इस अंक में कुल 09 आलेख, 10 कविताएं, एवं 02 कहानी है जिनमें हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में लिखे गये हैं। ये लेख भाषा एवं साहित्य, दर्शन एवं आध्यात्म्य, पर्यावरण एवं प्रबन्धन जैसे अनेक विषयों एवं विधाओं से सम्बन्धित हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक से वृहद पाठक वर्ग अवश्य लाभान्वित होगें। महाविद्यालय पत्रिका 'विहान' सूर्य की लालिमा से आगे बढ़कर सर्वत्र भरपूर रोशनी फैला रहा है! महाविद्यालय की यश पताका को चतुर्दिक फैलाने में यह अंक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं इस महाविद्यालय के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार सिंह एवं सचिव श्री मनोहर सिंह के प्रति दिल से आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी सतत प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से हमें पर्याप्त बल मिलता है। तदुपरान्त डॉ० अजीत कुमार सिन्हा, कुलपति विनोबा भावे विश्वविद्यालय, कुलानुशासक प्रो० (डॉ.) मिथिलेश सिंह, तथा अन्य अधिकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके द्वारा हमें बराबर सकारात्मक सहयोग मिलता रहता है। शासी निकाय एवं सम्पादक मण्डल के सभी सहयोगियों को भी धन्यवाद देता हूँ। अन्त में मैं 'विहान ' कार्यालय के सहयोगी श्री अमरजीत कुमार प्रसाद को साधुवाद देता हूँ, जिसने कंप्यूटर टाइपिंग में मदद कर पत्रिका के प्रकाशन में भूमिका निभाई है।

प्राचार्य

सम्पादक, 'विहान ' पत्रिका

Role of Education in Make in India

Dr. Santosh Kumar Lal
M. Com. (Gold Medalist), Ph. D.
H.O.D. Dept. of Com., Sariya College, Suriya
Email: drsantoshkumarlal@gmail.com

ABSTRACT

Our respected Father of nation Mahatma Gandhi said, "Human beings themselves are the real wealth of the nation, not gold and silver". Human beings are both ends and means of economic activities, hence are considered as a great assets of any nation.

Rightly, therefore, our government has a commendable aim of making more in India which means improving the efficiency of Indian Products irrespective of agriculture and allied products, mining, manufacturing of service. 'Make in India' campaign launched on 25th Sep. 2014 by our Prime Minister Mr. N. Modi got boosted with later announcement like 'Skill India' mission and 'Digital India' programme.

Higher level of educational attainment leads to skilled, productive and efficient work force which ensures standard quality of goods and services. Education is essential to increase the productivity of human capital. Education is regarded as the basis for the foundation for employability. Education implies not only gaining knowledge but also transforming that knowledge into application through vocational training and skill development. Education enhances people's capacity to work and their opportunities to work; promoting innovation ensures work satisfaction and also increases productivity. All these will lower unemployment, reduce social inequality and improve the flow of Investment.

The main purpose of this paper is to study the importance of the educational content and strategies required for 'Make in India', the challenges before it and also various measures to achieve success. Our educational institutions must become socially more responsible balancing career-focus and research-focus. The quality of this education should be based on accessibility, affordability, universality and measurability of both inputs and outcomes. The ultimate goal has to be to make people have national competence and global relevance, meaning convergence of transformational educational and transactional education, and balancing of academics with advocacy and praxis.

Efforts to improve unskilled labour intensive manufacturing sectors should be done and it is impossible without enhancing education. There is necessity to improve the productivity of human capital.

Key word: Make in India, Education

महिला उत्थान : एक विमर्श

डॉ. विनीता सिन्हा
सहायक प्रध्यापिका, समाजशास्त्र विभाग

सार

महिला सशक्तिकरण का प्रयास तभी सार्थक है जब महिलाएं स्वयं को खुद मजबूद एवं सशक्त करने का प्रयास करेगीं। महिलाओं को अपने हुनर एवं काबिलियत को साबित करने की आवश्यकता है और भविष्य को सवांरने के लिए प्रगति के पथ पर अडिग रहते हुए बढ़ते जाना होगा जिसकी शुरूआत हो चुकि है।

समाजिक सरोकार के कार्य में महिलाएं पीछे नहीं– बीसवी सदी की महिलाये आज हर क्षेत्र में अपना परचम लहराने के लिए तत्पर एवं लालायीत है बस उन्हें उत्साहित करने एवं सहयोग की आवश्यकता है। कुछ सदी पहले तक जहाँ महिलायें संकोच एवं सामाजिक बंदिश के कारण कोई संरचनात्मक कार्य या अपनी शैक्षणिक योग्यता को बढ़ाने में संकोच एवं असमर्थ थी आज महिलायें अपनी विचार परिवार के सामने रख रही हैं और पूरी आत्मनिर्भरता के साथ अपने भविष्य की योजना के बारे में विमर्श कर रही है और अपना आत्मसम्मान बढ़ा रही है। शिक्षा और अत्मनिर्भरता ही वह कुँजी है जो सफलता एवं सम्मानजनक स्थिति हासिल करने का मार्ग प्रशस्त करती है यहाँ हमें महिलाओं के उत्थान में अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस के आरंभिक इतिहास को जानना रोचक होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस को सही मायने में समझने के लिए हमें इसके इतिहास में जाना आवश्यक होगा, आखिर 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित करने और प्रत्येक वर्ष इसे मनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

विश्व के पुरूष–प्रधान समाज में आधी आबादी अपने विभिन्न अधिकारों से वंचित थी। पुरूष एवं महिलाओं के बीच असमानता ही वो बीज है जिसके कारण 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के समय से ही महिला अधिकार के मुद्दे प्रस्फुटित होने लगे थे। यूरोपियन देशों में महिलाएं औद्योगिक क्षेत्र में वेतनभोगी के रूप में काम करने लगी थी किन्तु महिलाओं का कोई संगठन नहीं होने के कारण पुरूष प्रधान ट्रेड यूनियानों के द्वारा महिला मुद्दों को पुरजोर तरीके से नही उठाये जाते थे जिसके कारण महिलाओं ने असन्तुष्ट होकर अपने को संगठित करना शुरू किया और सन् 1903 में अमेरिका में महिला श्रमिक संगठन की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य महिलाओं को उचित अधिकार और न्याय दिलाना था। इस संदर्भ में कालरा जेटकिन को याद न किया जाए तो बईमानी होगी क्योंकि इन्हीं के प्रयासों का फल है कि 1907 में पहला अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन को अंजाम दिया जा सका।

इस प्रयास को आगे बढाते हुए सन् 1909 में अमेरिका के ही मैनहैटन शहर में करीब दो हजार महिलाओं की एक रैली निकाली गई जिसमें सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों की माँग उठाई गई, सन् 1910 में कोपेन हेगन शहर में द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न समाजवादी एवं महिला आन्दोलन से संबन्धित लोग बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए, जिनकी मंशा थी कि महिला दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में जाना जाए और साल के एक दिन महिलाएं अपने अधिकार के लिए पुरजोर तरीके से आवाज उठाये। इस सम्मेलन में लगभग 17 देशों की महिलाओं ने प्रतिनिधित्व किया। सबों ने अपनी मंशा व्यक्त की कि विश्व महिला दिवस की आधारशीला रखी जाए। इस तरह नारीवादी शिक्षिका कालरा जेटकिन ने सबों की सहमति से 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा क्योंकि 8 मार्च को ही रूस की महिलाओं को प्रथम बार मतदान का अधिकार मिला था जिसे प्रतिकात्मक रूप से अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में घोषित किया गया।

इस तरह विश्व महिला दिवस के पाँचवे वर्षगाँठ के अवसर पर 1960 के दशक में महिलाओं के सभी सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक अधिकारो के समर्थन में प्रस्ताव पारित किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी अपने जन्मकाल से ही जेंडर के आधार पर किसी तरह के भेद भाव नही करने का आह्ववाह्न किया जिससे इस प्रस्ताव को और अधिक बल मिला और इस तरह से 1975 मे विश्व महिला दिवस को औपचारिक मान्यता प्रदान की गई। इससे पूरे विश्व में भी यह संदेश गया कि विश्व की सभी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक समस्याओं का हल तभी संभव है जब विश्व की आधी आबादी का पूर्ण सहयोग समर्थन और सहभागिता हो। संयुक्त राष्ट्र संघ के इस आवाह्न ने विभिन्न देशों को अपनी महिलाओं के स्तर में सुधार लाने के लिए प्रेरित किया जिसमें भारत का भी नाम उल्लेखनीय है।

भारत के संदर्भ में देखे तो हमारे संविधान निर्माताओं ने इस बात पर विशेष बल दिया कि लिंग के आधार पर किसी तरह का भेद–भाव न हो। केद्र सरकार एवं राज्य सरकार ने भी कानून बनाकर प्रयास किया कि महिलाओं के लिए बुनियादी सुविधाओं को हर हाल में सशक्त बनाया जाए, इसी को ध्यान में रखते हुए आजादी के बाद भारतीय संविधान के धारा 14,15,16 एवं 18 आदि को स्त्रियों के पक्ष में बनाए गए। भारत में कस्तूरबा, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजनी नायडू आदि विभिन्न महिलाओं ने स्त्री शोषण के विरूद्ध आवाज बुलन्द की। महिला सशक्तिकरण के लिए भारत सरकार ने भी कई कानून बनाये जिसमें 1954 में स्पेशल मैरेज एक्ट, हिन्दू सक्सेशन एक्ट, 1961 में दहेज उन्मूलन एक्ट पारित किया गया जिसके द्वारा दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि पर रोक लगाने का प्रयास किया गया साथ ही पैतृक सम्पति में बराबर का अधिकार, विवाह निबन्धन और कार्य स्थल पर उत्पीडन पर रोक लगाने के लिए कुछ सशक्त कानून बनायें गये। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ''महिला कल्याण मंत्रालय'' का भी गठन किया गया। भारत सरकार महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई कायक्रमों को अंजाम दे रही है– भारतीय संविधान के तिहतरवें संशोधन द्वारा ग्राम पंचायत के एक तिहाई सदस्यता महिलाओं के लिए संरक्षित किए गये। लोकसभा में 33% आरक्षण की माँग आदि शामिल है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली महिलाओं की दशा में सुधार के लिए कई कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं– जिसमें लाल कार्ड की व्यवस्था, इन्दिरा आवास योजना, उज्ज्वला योजना, शिशु विकास योजना आदि प्रमुख है जिससे महिलाओं के उत्थान का प्रयास जारी है।

महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से ही 1985–86 में दहेज उन्मूलन एक्ट को और भी सशक्त बनाया गया तथा 1994 में पहली बार महिलाओं के लिए इनकम टैक्स में छूट की व्यवस्था की गई थी ताकि उन पैसों से कामकाजी महिला अपने लिए एक मददकर्मी को बहाल कर सके। संविधान के अनुच्छेद 15(3) के अनुसार राज्य को यह अधिकार है कि वह महिला एवं बच्चों के उत्थान के लिए विशेष कदम उठायें। इस अनुच्छेद के आधार पर ही झारखण्ड़ सरकार ने कामकाजी महिलाओं के लिए प्रत्येक महीने में दो दिनों का विशेष अवकाश देने की व्यवस्था की गई थी ताकि कामकाजी महिलाएं अपने छूटे हुए धरेलू कामों को पूरा कर सकें। झारखण्ड

सरकार ने महिलाओं की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए 2017 में महिलाओं के नाम से जमीन या मकान खरीदने पर उसका रजिस्ट्रेशन शुल्क, मात्र एक रूपया कर दिया था। जिससे आने वाले समय में महिलाओं की स्थिति मजबूत हुई और इसका लाभ महिलाओं को मिला।

आज कामकजी महिला के लिए हर क्षण हर घड़ी परीक्षा की घड़ी होती है महिलाएँ हर क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति में दिखती है किन्तु आज के बदलते परिवेश तकनीकी, डिजिटल एवं अंकीय युग में महिलाओं के सामने अनेक समस्याएं भी है इसलिए लक्ष्य निर्धारित कर महिलाओं को उसे हासिल करने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता है, इसके दूरगामी परिणाम मिलेगें।

किसी संस्कृति को समझने के लिए उस समाज में स्त्रियों की स्थिति को समझने की आवश्यकता होती है क्योंकि महिलाओं की स्थिति ही किसी समाज के सांस्कृतिक चेहरे का दर्पण है। यह सर्वमान्य है कि किसी भी समाज या राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए महिलाओं की भागीदारी अति आवश्यक है। नारी समस्त सृष्टि (संसार) की जननी है, मातृत्व उनकी सबसे बडी साधना है। एक ओर महिलाओं में वात्सलय, बलिदान, क्षमा, स्नेह त्याग कूट–कूट कर भरा है तो दुसरी ओर वह कर्तव्यनिष्ठ पराक्रमी एवं कर्मठ भी है जो घर और बाहर बड़ी तन्मयता से सांमजस्य स्थापित कर अपने परिवार के भविष्य और समाज के निर्माण के लिए पूरी लगन से समर्पित है। इनके अभाव में मानव जीवन एवं समाज अपूर्ण है।

19वी० शताब्दी में अमेरिका में हजारों महिलाओं ने अपने स्मिता (पहचान) और सम्मान की रक्षा के लिए आवाज उठायी धीरे–धीरे महिलाओं में जागरूकता बढ़ी जिसका नतीजा यह हुआ कि वे कार्यस्थल पर महिला शोषण की जड़े जो अंधेरे में मजबूत हो रही थी उसके विरूद्ध भी आवाज बुलन्द करने लगी। इस जागरूकता की कड़ी है कि 2012 निर्भया काण्ड के आरोपी को फाँसी की सजा पर पूरा देश एकजुट दिखा। हम महिलाओं के लिए यह एक खुशनुमा विहान का प्रतीक है।

इन सब के बावजूद आज व्यवहारिक स्थिति यह है कि ''नारी'' न तो जन्म से पूर्व पूर्ण सुरक्षित है ओर न जन्म के बाद। महिला सशक्तिकरण एवं उत्थान के लिए अनेक योजनाएं सरकार एवं स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा चलाई जा रही है यदि इनपर अक्षरशः एवं ईमानदारी से अमल किया जाए तो वो दिन दूर नहीं जब भारतीय महिलाएं हर स्तर एवं हर क्षेत्र में पुरूषों के बराबर खड़ी हो सकेगी, अपितु आगे भी दिखेंगी। दुर्भाग्य की बात है कि इन तमाम कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद महिलाओं की स्थिति में अपेक्षित सुधार आना बाकि है। भारतवर्ष में जहाँ नारी को देवी की संज्ञा दी गयी है और भारत को माता कहकर पुकारा जाता है वहाँ की नारी रोज शोषित और अपमानित हो रही है यह अत्यन्त ही दुःखदायी एवं अशोभनीय है। हम सागर्भित इस निष्कर्ष पर पंहुचते है कि कहीं न कहीं हमसे चूक हो रही है।

इसके लिए निति निर्धारकों को भी शोध के द्वारा उन कमियों को उजागर करने की आवश्यकता है जिससे कुरीतियों पर विराम लगाया जा सके, साथ ही महिलाओं के प्रति समाज की सोच और मानसिक स्तर में परिवर्तन की आवश्यकता है। लगभग सौ वर्षो से अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के बाद भी हमें यह देखने और सोचने की आवश्यकता है कि आज महिलाएं कहाँ और उत्थान के किस पायदान पर खड़ी है, यद्यपि पिछले कुछ दशक में महिलाएं अपने अधिकारों और उद्देश्यों के प्रति जागरूक हुई है और वे समाज में रोज नये–नये मुकाम हासिल करने में सक्षम हो रही है।

यद्यपि राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर महिला सशक्तिकरण को आज विशेष महत्व दिया जा रहा है जिसके तहत महिला सरोकार से संबन्धित विभिन्न मुद्दों को चिन्हित कर उसे व्यवहारिक रूप में घरातल पर उतारने के लिए विभिन्न सरकारी समितियों का गठन किया जा रहा है जिसके अच्छे परिणाम आने लगे हैं आज महिलाएं जल, थल और वायु हर क्षेत्र में अपनी योग्यता और सफलता का परचम लहरा रही है, मिसाल प्रस्तुत कर रही है जो अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणादायक और हौसला बढ़ाने वाला है। आज सेना में महिलाओं की उपलब्धि को स्वीकार एवं पहचान कर केंद्रीय सरकार सेना में भी महिला कमिशन को मान्यता दी है और उसे लागू किया है, जिससे अब महिलाएं भी सेना के उच्च पदों पर आसीन होकर देश का गौरव बढ़ा सकती है।

आज महिलाओं को उनके अधिकार एवं कर्तव्यों के प्रति जागृत करने की आवश्यकता है ईश्वर की दी हुइ इस अमूल्य जिंदगी को हम कितना सार्थक बना सकते हैं इसके लिए हम नारी की पहचान सर्वप्रथम अपने आप से जरूरी है, अपने अन्दर की आवाज पहचाने अपनी क्षमता एवं हूनर को पहचाने उसे एक साकार रूप देने के लिए अपने लिए भी समय निकालें और निडर होकर अपनी पूरी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार प्रयासरत रहे।

Emergence of Hedge Fund in India Implication on the Capital Market

Arun Kumar
Assistant Professor
Dept. of Economics

Abstract

Hedge fund is a private investment partnership and funds pool that uses varied and complex proprietary strategies and invests or trades in complex products, including listed and unlisted derivatives. Put simply, a hedge fund is a pool of money that takes both short and long positions buys and sells equities, initiates arbitrage, and trades bonds, currencies, convertible securities, commodities and derivative products to generate returns at reduced risk. As the name suggests the fund tries to hedge risks to investor's capital against market volatility by employing alternative investment approaches. Many hedge fund investment strategies aim to achieve a positive return on investment regardless of whether markets are rising or falling ("absolute return"). Hedge fund managers often invest money of their own in the fund they manage. A hedge fund typically pays its investment manager an annual management fee (for example 2% of the assets of the fund). And a performance fee (for example 20% of the increase in the fund's net asset value during the year). Both co-investment and performance fees serve to align the interests of managers with those of the investors in the fund. Some hedge funds have several billion dollars of assets under management.

Introduction

Hedge fund is a private investment partnership and pool that uses varied and complex proprietary strategies and invests or trades in complex products, including listed and unlisted derivatives. Put simply, a hedge fund is pool of money that takes both short and long positions, buys and sells equities, initiates arbitrage, and trades bonds, currencies, convertible securities, commodities and derivative products to generate returns at reduced risk. As the name suggests, the fund tries to hedge risks to investor's capital against market volatility by employing alternative investment approaches.

Description

Hedge fund investors typically include high net worth individuals (HNIs) and families, endowments and pension funds, insurance companies, and banks. These funds work either as private investment partnerships or offshore investment corporations. They are not required to be registered with the securities markets regulator and are not subject to the reporting requirements, including periodic disclosure of NAVs. There are many strategies a hedge fund may use to generate returns. One such strategy is global macros, where the fund takes long and short positions in large financial markets based on the views influenced by economic trends. Then there are funds that work on market-neutral strategies. Here the goal of the fund manager is to minimize market risks by investing in long/short equity funds, convertible bonds, arbitrage

funds, and fixed income products. Another type includes event-driven funds that invest in stocks to take advantage of price movement generated by corporate events. Merger arbitrage funds and distressed asset funds fall into the category.

The Global Perspective

There is rich diversity in the sector as the asset management industry offers a mix of traditional mutual fund products and alternatives (real estate and hedge funds). The investor universe that the industry taps covers insurance funds, pension funds; sovereign wealth funds (SWFs) and high net worth individuals (HNWIs) /mass affluent/retail investors. In 2012, the global asset management industry managed 36.5% of the assets held by pension funds, SWFs, insurance companies and HNWIs/ mass affluent. This represents a huge pool of investible resources that global industry players are able to tap into. It is evident that Indian asset management addresses only a subset of the investors that its global counterparts do. The regulatory mandates in place in evolved economies allow access to the insurance and pension sectors. The industry structure possibly looks to create and harness core competencies in asset management. Industries such as insurance and pensions are allowed to invest in markets via asset managers with regulated and calibrated exposure levels.

Capital Markets

"Capital Markets" refers to activities that gather funds from some entities and make them available to other entities needing funds. The core function of such a market is to improve the efficiency of transactions so that each individual entity doesn't need to do search and analysis create legal agreements, and complete funds transfer.

Breaking Down 'Capital Markets'

Capital markets consist of suppliers and users of funds. Suppliers of funds include households and institutions serving them, such as pension funds; life insurance companies; charitable foundations such as colleges, hospital, and religious institution; and nonfinancial companies generating cash beyond their needs for investment. Users of funds include home and motor vehicle purchases; nonfinancial companies; and governments financing infrastructure investment and operating expenses.

Markets include primary markets, where new equity stock and bond issues are sold to investors, and secondary markets, which trade existing securities.

Capital Markets in Context

Broadly, capital markets can refer to markets for any financial asset.

In the context of corporate finance, the term refers to venues for obtaining investable capital for nonfinancial companies. Here, " investable capital" includes the external funds included in a weighted average cost of capital calculation- common and preferred equity, public bonds, and private debt – that are also used in a return on invested capital calculation. In a more limited corporate finance context, it refers to only equity funding, excluding debt.

In a financial services industry context, it refers to financial companies involved primarily in private markets, as opposed to public ones, in this sense; it is referring to investment banks, private equity, and venture capital firms in contrast to broker-dealers and public exchanges. In this case, capital markets are considered primary offerings of debt and equity (initial public offering) supported by investment banks through underwriting. This contrasts with the time after the initial public offering when the offering is publicly trading on exchanges in a secondary market. In the U.S., they primary regulator for an exchange is the Securities and Exchange Commission (SEC). This industry context is often meant when "capital markets" are contrasted with "financial markets." In the context of public markets operated by a regulated exchange, "capital markets" can refer to equity markets in contrast to debt/bon/fixed income, money, derivatives, and commodities markets. Mirroring the corporate finance context, "capital markets" can also mean equity and debt/bond/fixed income markets.

Functioning of hedge funds

Let's begin the discussion firstly with how hedge funds function. The strategies that hedge funds use have already been discussed above in the introduction section. "Most hedge funds attempt to find trades that are almost arbitrage opportunities-pricing mistakes in the markets that can produce low-risk profits. Once a mispriced asset is identified, hedges are devised for their position so that the fund will benefit from the correction of the mispricing but be affected by little else". Because hedge funds seek inefficiencies in the capital markets and attempt to correct them, they can play a valuable role in financial market by bringing security prices closer to fundamental values. With their focus on arbitrage opportunities, hedge funds in principle pursue absolute returns rather than returns in excess of a benchmark, such as an index of the stock or bond markets. Since hedge funds are not regulated, they need not disclose their performance. Databases only report the performance of hedge funds that voluntarily send their returns to the sponsoring organization". "Hedge funds do well because hedge fund managers recognize quickly the changing market trends, and try to profit from such developing trends before other mainstream investors see such trends. Through diversification, many hedge funds limit their risk exposure levels, a strategy that serves as a defense mechanism in case of a sudden change in market trend. Other hedge fund managers apply advanced asset allocation techniques through analysis of trading data in combination with technical analysis to decide asset allocation models which best suits their interests".

मुगल काल में स्त्रियों की दशा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रो० कार्तिक प्रसाद यादव
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग,

सार

मुगलकालीन समाज में रित्रयों की दशा तथा जीवन बहुत दयनीय थी। समाज में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं था। उनकों सभी प्रकार की स्वत्रंता एवं खुशीयों और त्यौहार से भी दुर रखा जाता था। राजघरानों की रित्रयों की अपेक्षा साधारण धर की स्त्रियों की दशा से अत्यंत खराब थी। हिन्दू समाज में सती प्रथा, विघवा विवाह निषेघ, दहेज की प्रथा एवं आर्थिक पराधिनता साथ ही साथ शिक्षा पर प्रतिबंध होने के कारण उनका जीवन अभिशाप्त था।

मुगलकाल में प्राचीन भारत की तुलना में स्त्रियों की स्थिति में अत्यंत गिरावट आ गई थी। किसी लड़की का जन्म लेना पुत्र के जन्म की तुलना में शुभ नहीं माना जाता था यानी मुगल काल के समाज में पुत्री का जन्म लेना हेय दृष्टि से देखा जाता था। कर्नल यड़ के अनुसार ''राजपूत इस धारणा से ग्रसित थे कि वह दिन पतन का होता है। जब एक कन्या जन्म लेती है मुगलशाही घरानों में भी लड़के और लड़की का अंतर अकबर के इस कथन से आसानी से लगाया जा सकता है यानी मुझे पुत्र की प्राप्ति होगी तो मैं शेख मोइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह पर आगरा से पैदल जाऊंगा।'' इस प्रकार समान्य रूप से यह कह सकते हैं कि मुगलकालीन समाज के हिंदू –मुस्लिम के बीच दोनों में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत रूखा था जिसका स्थिति हम इस प्रकार से अवगत करा सकते हैं।

1. पर्दाप्रथाः– मुगल काल में मुस्लिम स्त्रियों में पर्दा प्रथा का प्रचलन था। मुस्लिम स्त्रियां बुर्के का प्रयोग करती थी उलबेली के अनुसारः– चरित्रहीनता गरीबी को छोड़कर मुस्लिम स्त्रियों कभी घर से यहां नहीं निकलती थी, विशेष अवसर पर स्त्रियां घर से निकलती थी मुस्लिम शासक वर्ग ने पर्दाप्रथा का अनुसरण किया। बेनी प्रसाद का कहना है कि नूरजहां एक ऐसी महिला थी जो पर्दा प्रथा में नहीं रहती थी मुस्लिम घराने की स्त्रियां ढकी पालकी से ही घर से बाहर निकलती थी स्त्रियों के लिए अंगरक्षक भी होते थे। बदांयूनी के अनुसारः– ''अकबर ने आदेश निकाला था यदी कोई स्त्री बिना पर्दे के बाजार में भ्रमण करती है तो उसे वैश्यालय में ले जाया जाए और पेशे को अपनाने के लिए बाध्य किया जाए।

मुसलमानों में प्रचलित पर्दाप्रथा से प्रभावित हुए बिना न रह सका। जायसी एवं विद्यापती के विवरणों से पता चलता है उत्तर प्रदेश एवं बंगाल में हिंदू घरों में भी पर्दा का प्रचलन था कुलीन घरानों की स्त्रियां घर से घुंघट निकाल कर घूमती थी। किसान एवं विभिन्न पेशे के लोग स्त्रियां पर्दा नहीं करते थी।

2. विवाहः– कुरान के अनुसार मुसलमान चार विवाह कर सकता था, जिससे मुसलमानों का पारिवारिक जीवन कष्ट पूर्ण हो जाता था। स्त्रियों में पारस्परिक प्रतिद्वंदिता आ जाती थी जिससे आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती थी निम्न वर्ग का मुसलमान एक विवाह करता था। हिंदुओं में एक पत्नी विवाह का प्रचलन था यदि किसी हिंदू की पत्नी से संतान नहीं होती थी तो वह ब्राह्मणों की सहायता से दूसरी विवाह कर सकता था। हिंदू राजाओं एवं शाही घरानों में अनेक विवाह एवं राजपूतों में स्वयंवर का प्रचलन था।

मुगलकालीन समाज में बाल विवाह का प्रचलन था। मुसलमानों के आगमन से स्त्री अपराहन के कारण हिंदुओं में भी बाल विवाह को जन्म दिया। कन्या का विवाह 8 और 9 वर्ष की आयु में कर दिया जाता था।

परंतु अकबर ने बाल विवाह पर रोक लगाते हुए 12 वर्षों से कम लड़कियों का उम्र और 16 वर्षों से कम लड़कों का उम्र नहीं होना चाहिए। परंतु इसका कोई सफलता नहीं मिला दहेज प्रथा उस समय भी प्रचलन था।

3. सती प्रथाः– मुगलकाल में हिंदू समाज की उच्चवर्ग की स्त्रियों में सतीप्रथा का प्रचलन बहुतायत था। इस प्रथा का विशेष रूप से राजस्थान में था। इब्नबतूता ने यह बताया कि समाज में विधवाओं की स्थिति दयनीय थी विधवाएं विवाह नहीं करती थी उन्हें अपने केशों को काटना होता था और अपना सारा जीवन दास की भांति बिताना पड़ता था अकबर ने सती प्रथा को रोकने के लिए आदेश निकाला किसी स्त्री को जबरन सती नहीं करा सकते हैं ऐसा करने वालों को दंडित किया जाएगा परंतु अकबर का उद्देश सफल नहीं हो पाया।

4. जौहर प्रथाः– मुगलकाल में राजपूत स्त्रियों में जोहर की प्रथा प्रचलित थी। राजपूत जिस समय रणभूमि में न्योछावर हो जाते थे, उस समय उनकी स्त्रियां हंसते–हंसते अग्नि में समर्पित हो जाती थी इसे जौहर की प्रथा कहते हैं। अब्दुल फजल ने भी चित्तौड़ पर मुगलों के अधिकार के बाद वहां की राजपूत स्त्रियों के जौहर के विषय में उल्लेख किया है।

5. स्त्री शिक्षाः– मुगल काल में उच्च वर्ग की विदुषी थी कला एवं साहित्य में विशेष अनुराग रखती थी मीराबाई, नूरजहां, अकबरबाई एवं गुलबदन बेगम इस काल की विदुषी स्त्रियां थी। दक्षिण भारत में संस्कृति के क्षेत्र में स्त्रियों में विशेष रूचि थी। कन्याओं को घर पर ही शिक्षा दी जाती थी।

6. स्त्रियों की व्यवसायः– भारत की स्त्रियां अपने घर पर ही कार्य देखती थी कुछ स्त्रियां विभिन्न व्यवसाय से जुड़ी हुई थी, स्त्रियां कपड़ा बुनने का कार्य करती थी। कुछ स्त्रियां नाच गान भी करती थी। अलबरूनी ने लिखा है– ''देवदासियां मंदिरों में नृत्य या भक्तिगीत गाने के लिए सुंदर स्त्रियों को रखा जाता था। शिक्षित स्त्रियों ने अध्यापन का व्यवसाय अपनाया था वैश्याएं शहर से बाहर निवास करती थी।

7. प्रशासन में योगदानः– मुगलकाल में स्त्रियों ने प्रशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी 1560 से 64 तक अकबर के मुख छाया माहम अनगा का प्रशासन पर काफी प्रभाव था। इतिहासकारों ने इसे पेटीकोट गवर्नमेंट का नाम दिया है गोंडवाना की रानी दुर्गावती के शासन

के अंतर्गत 70000 ग्राम और कस्बों थे अहमदनगर में चांदबीबी का शासन था 1611 से 1627 तक जहांगीर के शासनकाल में नूरजहां का विशेष प्रभाव था।

8. परिवार में स्थानः– हिंदू समाज में नारी को गृहस्वामिनी के रूप में देखा जाता था कोई भी धार्मिक कार्य स्त्री के अनुपस्थिति में संपन्न नहीं हो सकता था, स्त्रियां घरेलू कार्य एवं पति का सेवा करना था। मुस्लिम परिवार में स्त्रियों की दशा सोचनीय थी, मुसलमान पुरुष अपनी पत्नी को आसानी से तलाक दे सकता था।

***(a)* भोजनः–** बाबर ने साधारण वर्ग का भोजन खिचड़ी बताया है। उत्तर भारत में मुख्य भोजन गेहूं, मोटे अनाज की पत्तियां, सब्जी और दाल था। हिंदू वर्ग के उपेक्षा मुस्लिम मांस का अधिक प्रयोग करते थे। सामान्य वर्ग में नमक महंगा होने के केले के छाल को निकाल कर कड़वी वस्तुओं का प्रयोग करते थे।

उच्च वर्ग के लोग चपाती, चावल, पूरी, दही, मक्खन, तेल, धी, खीर, एवं पनीर इसका मुख्य भोजन था। राजपूत और मुसलमान मांस का प्रयोग करते थे।

(b) **वस्त्रः**– आईने अकबरी से ज्ञात होता है कि मुगल शासक उत्तम प्रकार के वस्त्र पहनते थे। फार्गी, चकमन, गादर, आदि 11 प्रकार कोटो का उल्लेख मिलता है। औरंगजेब का पहनावा सादा था। अमीर वर्ग धोती और किमती साल पहनते थे। कालीकट के ब्राहाण काठ की खडाउ का प्रयोग करते थे बर्नियर ने कहा है– की गर्मी के कारण मौजे नहीं पहनते थे। भारत की जलवायु गर्म होने के कारण लोग कम कपड़े का प्रयोग करते थे। कपास की खेती सूती वस्त्र के निर्माण गांव में होता था।

(c) **आवास फर्नीचरः**– गांव में साधारण वर्ग मिट्टी के बने मकानों में निवास करते थे, चारपाई तथा बांस की चटाइयां उसका फर्नीचर था। कुम्हार द्वारा मिट्टी का बर्तन निर्मित करते थे। अभिजात्य वर्ग तांबे और अन्य धातुओं के बर्तन का प्रयोग करते थे।

(d) **मादक द्रव्यः–** कुरान में मद्य निषेध होने के बावजुद भी, मुस्लिम समाज के मदिरा का सेवन प्रचलन था। औरंगजेब को छोड़कर सभी शासक मदिरा का सेवन करते थे। मदिरा के सबसे सस्ती ताड़ी होती थी। 1684 में औरंगजेब ने मध निषेध पर प्रतिबंध लगाया परंतु अपने दरबार में और अमीरों से रोक नहीं पाया। अफीम का प्रचलन राजपूतों और मुसलमानों में अत्यधिक था। हुमायूं अफीम का अत्यधिक प्रयोग करता था।

(e) **श्रृंगारः–** मुगल काल में स्त्री और पुरुष दोनों श्रृंगार के दोनों प्रेमी थे। अब्दुल फजल ने 37 प्रकार के आभूषणों का उल्लेख किया। औरंगजेब को छोड़कर सभी मुगल शासक आभूषण के प्रेमी थे। गरीब वर्ग के सोने–चांदी के को छोड़कर अन्य वस्तुओं का आभूषण पहनते थे।

(f) **मनोरंजनः**– चौगान राजपूतों और मुगल शासक दोनों का प्रिय खेल था। शाही महिलाएं भी इसमें भाग लेती थी। मीर शरीफ एवं मीर गयासुद्दीन नामक दो अकबर कालीन खिलाड़ियों के नाम प्राप्त होते हैं। शासक वर्ग शिकार का भी शौकीन था। अमीर लोग शेर–चीते, हांथी आदि जंगली जानवरों का शिकार करते थे और अमीर और गरीब तीरों से चिड़ियों का शिकार करते थे। मुगलकाल में मुक्केबाजी पशु–दौड़ पशु–युद्ध, घुड़सवारी, तैराकी, शतरंज, और ताश भी मनोरंजन के लिए साधन था।

(g) **दास प्रथाः–** मुगल काल में दास प्रथा का प्रचलन था। हिंदू और मुसलमान शासक एवं अभिजात्य वर्ग में दास–दासियों को रखा जाता था। चीन और तुर्की से भी दासियों का आयात होता था। युद्ध में बंदी बनाए गए पुरुषों से दास का कार्य कराया जाता था।

The Hypothesis

Rabindra kumar Mishra,
Asst. Prof. in English

Research activity is incomplete without hypothesis. The derivation of a suitable hypothesis goes hand in hand with the selection of a research problem. When the mind has before it a number of observed facts about some phenomenon, there is a need to form some generalization relative to the phenomenon concerned.

THE MEANING OF HYPOTHESIS

A hypothesis is a statement temporarily accepted as true in the light of what is, at the time, known about a phenomenon, and it is employed as a basis for action in the search for new truth.

It is a guess, supposition or tentative inference as to the existence of some fact, condition or relationship relative to some phenomenon which serves to explain such facts as already are known to exist in a given area of research and to guide the search for new truth.

It is a statement temporarily accepted as true in the light of what is, at the time, known about a phenomenon, and it is employed as a basis for action in the search for new truth.

It is a tentative supposition or provisional guess which seems to explain the situation under observation.

A hypothesis states what we are looking for. A hypothesis looks forward. It is a proposition which can be put to a test to determine its validity. It may prove to be correct or incorrect.

It is a tentative generalization the validity of which remains to be seen. In its most elementary stage the hypothesis may be any hunch, guess, imaginative idea which becomes the basis for further investigation.

Science employs hypotheses in guiding the thinking process. When our experience tells us that a given phenomenon follows regularly upon the appearance of certain other phenomena, we conclude that the former is connected with the latter by some sort of relationship and we form a hypothesis concerning this relationship. Hypotheses reflect the research worker's guess as to the probable outcome of the experiments.

A hypothesis is an assumption or proposition whose tenability is to be tested on the basis of the compatibility of its implications with empirical evidence and with previous knowledge.

It is therefore a shrewd and intelligent guess, a supposition, inference, hunch, provisional statement or tentative generalization as to the existence of some fact, condition or relation-ship relative to some phenomenon which serves to explain already known facts in a given area of research and to guide the search for new truth on the basis of empirical evidence. The hypothesis is put to test for its tenability and for determining its validity.

IMPORTANCE OF HYPOTHESIS

Hypothesis has a very important place in research although it occupies a very small space in body of a thesis. It is almost impossible for a research worker not to have one or more hypotheses before proceeding with his work. If he is not capable of formulating a hypothesis about his problem, he may not be ready to undertake its investigation. The aimless collection of data is not likely to lead him anywhere. The importance of hypothesis can be more specifically stated as under:

1. It provides direction to research. It defines what is relevant and what is irrelevant. Thus it prevents the review of irrelevant literature and the collection of useless or excess data. It not only prevents wastage in the collection of data, but also ensures the collection of the data necessary to answer the question posed in the statement of the problem.

2. It sensitizes the investigator to certain aspects of the situation which are relevant from the standpoint of the problem at hand. It spells the difference between precision and haphazardness, between fruitful and fruitless research.

3. It is a guide to the thinking process and the process of discovery. It is the investigator's eye—a sort of guiding light in the world of darkness.

4. It prevents blind research prevents indiscriminate gathering of data which may later turn out to be irrelevant.

5. It focuses research. Without it research would be like a random and aimless wandering.

6. It serves the function of linking together related facts and information and organising them into one comprehensible whole.

7. It enables the investigator to understand with greater clarity his problem and its ramifications, as well as the data which bear on it. It further enables a researcher to clarify the procedures and methods to be used in solving his problem and to rule out methods which are incapable of providing the necessary data.

8. It serves as a framework for drawing conclusions. It makes possible the interpretation of data in the light of tentative proposition or provisional guess. It provides the outline for stating conclusions in a meaningful way.

9. It sensitizes the individual to facts and conditions that might otherwise be overlooked.

10. It places clear and specific goals before us. These clear and specific goals provide the investigator with a basis for selecting samples and research procedures to meet these goals.

SOURCES OF HYPOTHESIS

The task of deriving adequate hypotheses is essentially parallel to that of selecting suitable problems. There is no royal road to the location of a suitable problem, likewise there is no royal road to the discovery of fruitful hypotheses. The derivation of a good hypothesis demands characteristics of experience and creativity. Though hypotheses should recede the gathering of data, a good hypothesis can come only from experience. Some degree of data gathering, the review of related literature, or a pilot study must precede the development and gradual refinement of the hypothesis.

The factor of persistence is no less important. Success in an investigation depends on the considerable time and effort spent in tracing and stating tentative hypotheses.

A good investigator must have not only an alert mind capable of deriving relevant hypotheses, but also a critical mind capable of rejecting faulty hypotheses. The person who is full of ideas may be lacking in critical analysis—that is, originality may be somewhat incompatible with a critical attitude.

The specific sources of hypothesis are being discussed below :

1. **General Culture**. In the investigations for solving problems of Indian Education, our hypotheses cannot lose sight of the broad general culture to which we belong. While formulating such hypotheses we cannot ignore religious or moral bias in Indian Education, typical role of family in Indian Education, play interests of Indian children, our prejudices against women education, compulsory education or co-education. Our cultural heritage is a great source of ideas, theories, tentative theories and provisional propositions.

2. **Personal Experience**. We have emphasized above that a good hypothesis can come only from experience. Some of our experiences may be directly changed into research hypotheses, for example ‘Teachers' character and personality arc imbibed by the students, good study habits improve achievement. Teacher’s punctuality enhances student's punctuality. Library reading enhances interest in knowledge, etc.

3. **Analogies.** Although reasoning by analogy generally is considered unacceptable as a source of proof, it is a very fertile source of potheres. It is the process of framing hypothesis from the likenesses and similarities. It is assumed that the existence of similarities between two situations is not accidental. but that it is the result of the operation of some law common to the two situations. For example if our problem is similar in nature to a problem studied in a foreign land, we may frame our hypothesis in the same manner.

4. **Scientific Theory**. Then; are various scientific laws or theories which arc transferrable to the field of educational researches p example. we have theories like—sound mind in a sound bop handicapped children face adjustment problems, rest relieves fatigue etc.

भारतीय संवैधानिक प्रावधान एवं महिला सशक्तिकरण मे गैर सरकारी संगठन की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अरुण कुमार

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान विभाग,

सरिया कॉलेज सरिया, गिरिडीह (झारखंड)

सार

महिलाओं के लिए भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों के बारे में शोध आलेख मे चर्चा की गई है। संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों एवं धाराओं में महिलाओं के लिए किए गए विशेष प्रावधानों का जिक्र किया गया है। गैर सरकारी संगठनो के अर्थ एवं भूमिकाओं का विश्लेषण करते हुए नारी सशक्तिकरण में इसकी योगदान तथा महिलाओं को आत्मनिर्भर ,आत्म विश्वासी, स्वावलंबी आदि बनाकर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने तथा महिलाओं में जागरूकता लाने में गैर सरकारी संगठनों ने अहम भूमिका अदा कर रही है।

भूमिका

देश की सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीतिक सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं का समग्र विकास से संबंधित है। जिसके माध्यम से महिलाएं समाज में अपनी गरिमा पूर्ण एवं सशक्त भूमिका निभा सके, अपने अधिकारों के बारे में सजग रहें, अपने आत्मसम्मान को बढ़ा सके तथा आत्मनिर्भरता के साथ आत्मविश्वास को हासिल करने में सफल हो सके। भारतीय संविधान विभिन्न प्रावधानों के तहत महिलाओं को पुरुषो के समकक्ष रखा गया है।

संविधान की प्रस्तावना का शुरुआत 'हम भारत के लोग'[1] से प्रारंभ होती है। इसका आशय यह कि पुरुषों के साथ महिलाओं को एक समान माना है तथा एक समान सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय की बात कही गई है। संविधान के द्वारा महिलाओं को भी धर्म, विश्वास, उपासना एवं विचार अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता एवं प्रतिष्ठा के अवसर की समानता प्रदान किया गया है।

संविधान के माध्यम से सभी नागरिकों को एक समान अधिकार प्रदान किए गए हैं साथ ही महिलाओं के लिए संविधान में विशेष प्रावधान की गई है। जैसे अनुच्छेद 14 मे भारत का क्षेत्र के सभी व्यक्तियों को विधि के समक्ष समानता प्राप्त है।[2] साथ ही विधियों के समान संरक्षण से लिंग के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता है। अनुच्छेद 15 कहा गया है कि धर्म, मूल वंश, जाति ,लिंग, जन्म स्थान के आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं [3] किए जा सकते अर्थात संविधान के अनुच्छेद 14 -15 स्त्री पुरुष समानता को व्यक्त करता है। अनुच्छेद 15 (3) मे महिलाओं एवं बालकों के लिए विशेष उपबंध कर सकता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं एवं बालको की दशा पुरुषों से थोड़ी भिन्न है। इसलिए इस वर्ग को विशेष संवैधानिक संरक्षण प्रदान किया गया है। प्रारंभ में महिलाओं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में

अत्यंत दयनीय थी अपितु बाल विवाह, बहु विवाह, दहेज प्रथा, बलात्कार,शोषण एवं अत्याचार जैसी प्रथाएं एवं घटनाएं घटित होती थी।

अनुच्छेद 15 (3) के तहत महिलाओं को अनेक संवैधानिक प्रावधान किए गए हैं जिन्हें न्यायालय ने भी अपनी मान्यता प्रदान की है।[4]

1. विशेष विवाह कानून की धारा 36 के तहत गुजारे भत्ते के आदेश हमेशा स्त्रियों के पक्ष में देती है।
2. महिलाओं को आपराधिक प्रक्रिया संहिता के तहत जमानत पर रिहा होने के विशेष अधिकार देते हैं।
3 महिलाओं को गिरफ्तार करने के लिए विशेष प्रावधान है जैसे गिरफ्तारी महिला पुलिस के द्वारा सूरज ढलने के पहले करना आवश्यक होता है।
4. महिलाओं के लिए अलग जेल की व्यवस्था तथा गिरफ्तारी के दौरान अथवा तलाशी के लिए महिला सिपाही का होना आवश्यक है।
5. शिक्षण संस्थाओं में नामांकन हेतु महिलाओं के लिए सीट आरक्षित किए गए हैं ।
6. स्थानीय स्वशासन में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण का प्रावधान किए गए। कई राज्यों में तो 50% महिलाओं के लिए नगरीय निकाय एवं स्थानीय स्वशासन मे आरक्षण का प्रावधान किया गया है।

अनुच्छेद 42 के तहत महिलाओं को विशेष प्रस्तुति सहायता की व्यवस्था की गई है। इस दौरान महिला कर्मियों को विशेष अवकाश वेतन सहित प्रदान करने का प्रावधान किया गया।[5]

अनुच्छेद 16 के माध्यम से राज्य के अधीन किसी भी पद पर नियुक्ति के विषय में महिला पुरुष को एक समान अधिकार प्रदान किए गए।[6] 'समान कार्य के लिए समान वेतन' की व्यवस्था संविधान के द्वारा प्रदान की गई है ताकि महिलाओं के साथ भेदभाव नहीं किया जा सके।

संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के माध्यम से महिलाओं को कुछ अधिकार अप्रत्यक्ष रूप से अंतर्निहित की गई है, जिन्हें सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय व द्वारा समर्थन प्रदान किया है। मेनका गांधी बनाम भारत संघ के मामले में उच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 को एक नए आयाम प्रदान किया है। जिसके तहत आहार का अधिकार भौतिक अस्तित्व तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें मानव गरिमा को बनाए रखते हुए जीने का अधिकार के अंतर्गत शामिल किया गया है। साथ ही आहार पाने का अधिकार व प्रदूषण मुक्त जल एवं वायु का उपयोग करने का अधिकार, निःशुल्क कानूनी सहायता प्रदान करना, बलात्कार से पीड़ित महिलाओं को अंतरिम प्रतिकार पाने का अधिकार, 6 से 14 साल के बालक- बालिका को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था इसमें शामिल किया गया।[7]

अनुच्छेद 23 मे मानव के दुव्यापार एवं बलात श्रम का निषेध किया गया है। जिसके तहत मनुष्य एवं स्त्रियों को जानवरों की तरह क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता तथा स्त्रियों एवं बालकों के साथ अनैतिक व्यापार, दास प्रथा, बलात श्रम, बंधुआ मजदूर जैसे व्यवस्था को प्रतिबंधित की गई है[8] बलात श्रम को मानव की प्रतिष्ठा एवं गौरव पर आघात बताते हुए इसे प्रतिबंधित किया गया है।

भारतीय संविधान के भाग 4 में उल्लेखित नीति निदेशक तत्व, जिसका उद्देश्य समाज में सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना करना है, के माध्यम से कई विशेष प्रावधान महिलाओं के लिए की गई है।[9]

अनुच्छेद 39 (क) के अनुसार महिला पुरुष सभी नागरिकों को एक समान रूप से जीविका उपार्जन के साधन उपलब्ध कराना।

अनुच्छेद 39(ख) के तहत महिला पुरुष मजदूरों के स्वास्थ्य एवं शक्ति का तथा बालकों के शिवकुमार अवस्था का दुरुपयोग ना हो एवं आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर नागरिकों को ऐसे रोजगार में ना जाना पड़े जो उनकी उम्र और शक्ति के प्रतिकूल हो।

अनुच्छेद 42 के तहत गर्भवती महिलाओं की सहायता के लिए प्रसूति सहायता उपबंध की व्यवस्था की गई है। जिसके तहत महिलाओं को अवकाश प्रदान करने का प्रावधान किया गया है।

अनुच्छेद 44 के तहत एक समान नागरिक संहिता स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा ताकि स्त्री पुरुष में किसी तरह का भेदभाव ना हो सके।[10]

1992 ईस्वी में संविधान के 73 में एवं 74 में संवैधानिक संशोधन के माध्यम से स्थानीय स्वशासन ग्रामीण एवं शहरी दोनों में महिलाओं के लिए 33% सीट आरक्षित करने का प्रावधान किया गया वर्तमान समय में महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रतिशत बढ़ाकर 50 फ़ीसदी कर दिया गया।[11] इससे महिलाओं के लिए राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है। महिलाओं के लिए राष्ट्रीय आयोग अधिनियम 1990 के तहत राष्ट्रीय महिला आयोग का भी गठन किया गया है।[12]

संविधान के द्वारा महिलाओं को पुरुष के समकक्ष लाने के लिए कर संवैधानिक प्रावधान करने तथा कई कानून बनाए जाने के बाद भी महिलाओं के साथ शोषण तथा भेदभाव आज भी जारी है आज भी महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो सकी है महिलाएं पुरुषों को आर्थिक सुरक्षा मुहैया कराने में असफल रहा है। पैतृक संपत्ति में स्त्रियों को समान अधिकार अधिनियम 2005 लागू होने के बाद भी व्यवहारिक जीवन में इसका अनुपालन नहीं हो पा रहा है ।

आज भी महिलाएं निर्बल एवं असहाय है। इसके लिए महिला सशक्तिकरण की जरूरत महसूस हो रही है। सरकार इसके स्थिति सुधारने के लिए लगातार प्रयासरत है साथ ही सरकार की विभिन्न एजेंसियां एवं सरकारी तथा गैर सरकारी संगठन महिलाओं की दशा और दिशा बदलने के लिए सार्थक पहल कर रही है।

गैर सरकारी संगठन (एन. जी. ओ.) :-

गैर सरकारी संगठन से आशय लोगों के वैसे संगठित समूह से होता है जो औपचारिक स्वचालित होता है अथवा सदस्य नियम व विनियम से बंधे होते हैं । यह संगठन समाज और राष्ट्र मैं विकासात्मक एवं कल्याणकारी कार्य को करते हैं ऐसे संगठनों के कुछ अपने मुख उद्देश्य एवं मूल्य होते हैं जिसके माध्यम से समाज में व्यापक बदलाव लाने के लिए लगातार प्रयास से रहते हैं। लॉर्ड बेवरिज गैर सरकारी संगठन को परिभाषित करते हुए कहा की "गैर सरकारी संगठन एक ऐसा संगठन होता है जिसका आरंभ एवं प्रशासन इसके सदस्यों के द्वारा किसी बाढ़ नियंत्रण के बिना किया जाता है चाहे इसके कार्यकर्ता वैतनिक हो अथवा अवैतनिक हो।"[13] मोटे तौर पर हम कर सकते हैं की "गैर सरकारी संगठन एक वैधानिक सरकार से स्वतंत्र एक ऐसा संगठन है ।जो सार्वजनिक हितों के उद्देश्य को आगे बढ़ाता है। जिसका लक्ष्य लाभ कमाना नहीं होता है। जिसका वित्त पोषण प्राय पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से सरकार से प्राप्त धनराशि से होता है और जो सरकारी प्रतिनिधियों से दूरी बनाते हुए अपना घर सरकारी स्वरूप बनाए रखते हैं।"

जनकल्याण एवं समाज सेवा भारत की प्राचीन परंपरा रही है। इस परंपरा को आगे बढ़ाने में गैर सरकारी संगठन अहम भूमिका निभा रही है। जरूरतमंदों को सहयोग प्रदान करना, प्राकृतिक विपदा के शिकार लोगों को मदद पहुंचाना, महिला, दलित, पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए विभिन्न तरह के सशक्तिकरण संबंधी कार्यक्रम चलाना,समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के प्रति जागरूकता लाना, शिक्षा ,स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के प्रति जागरूकता

लाना, महिलाओं की क्षमता निर्माण, आय के साधनों का विकास, निर्धन ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने ,उनके कौशल अभिवृद्धि एवं उन्नयन हेतु महिलाओं को विभिन्न तरह का प्रशिक्षण एवं रोजगार कार्यक्रम चलाना जैसे महिलाओं को कृषि से जोड़ने ,पशुपालन, डायरी ,मत्स्य पालन ,खादी एवं ग्रामोद्योग,हथकरघा ,हस्तशिल्प ,सामाजिक वानिकी आदि परंपरागत क्षेत्र में दक्षता एवं कौशल उन्नयन हेतु प्रशिक्षण उपलब्ध कराना ताकि ग्रामीण महिलाओं की उत्पादकता एवं आय में वृद्धि हो सके साथ ही राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए

अपने हक और अधिकार के प्रति जागरूकता प्रदान करना तथा स्थानीय स्वशासन में सशक्त भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना।[14] वही सामाजिक सुविधाओं की उपलब्धता, राजनीतिक एवं आर्थिक नीति निर्धारण में भागीदारी ,समान कार्य के लिए समान वेतन, कानून के तहत सुरक्षा अधिकार आदि प्रदान करवाने में इन दिनों गैर सरकारी संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। महिला सशक्तिकरण से आशय स्त्रियों को पुरुषों के बराबर संवैधानिक, राजनीतिक ,सामाजिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में उनके परिवार, समाज, राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की आजादी से है।[15]

महिला सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाओं में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जागृत हुई है। पुरुष और महिलाएं के बीच जो विभेद की खाई चौड़ी थी। वह धीरे-धीरे कम हो रही है। इस दिशा में महिलाओं में शिक्षा का प्रसार प्रचार, अपने हक और अधिकार के प्रति जागरूक होने, आर्थिक क्षेत्र में सशक्त होने, राजनीतिक क्षेत्र में अपनी बेहतरीन उपस्थिति दर्ज करा कर अपनी अबला होने की पुरानी मान्यताओं को समाप्त करने की दिशा में उठाए गए कदम शामिल है। जिसमें सरकार के विभिन्न संस्थाओं के अलावे गैर सरकारी संगठनो के अहम योगदान है।

जीवन–मूल्य व हिंदी साहित्य का अंतसंबंध

प्रमोद कुमार

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

सरिया कॉलेज, सरिया

कोई भी साहित्य निरुद्देश्य नहीं लिखा जाता। जहाँ तक हिंदी साहित्य की बात है तो इसके अंतर्गत आने वाले कवि, कथाकार, नाटककार, निबंधकार आदि सभी किसी न किसी प्रयोजन से ही रचनाएँ करते हैं। साहित्य के मूल स्वभाव में जगत तथा जन–कल्याण की कामना अंतर्निहित रहती है। जीवन–मूल्यों के आधार ग्रहण किए बिना मानव–जीवन की अर्थवत्ता व साहित्य की सार्थकता सिद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि साहित्य का मूल प्रयोजन मानवीय जीवन ही होता है। भारतीय चिंतकों ने जीवन–मूल्यों की चर्चा साहित्य के संदर्भ में की है। मूल्य अथवा जीवन–मूल्य की चिंता तो रचना–कर्म में अनिवार्य रूप से होती है। समय और समाज में परिवर्तन स्वभाविक है। परिस्थिति के अनुसार भले ही मूल्यों का स्वरूप बदलता रहा है, फिर भी प्राचीन युग के काव्यों से लेकर आधुनिक रचनाओं में मूल्यों की स्थापना अवश्य हुई। यह भी सत्य है कि हिंदी साहित्य में मूल्य–चर्चा देश और समाज के संदर्भ में होता रहा है।

साहित्य में जहाँ 'हित की भावना' का होना अनिवार्य है, वहीं जीवन–मूल्य में इसे प्रतिष्ठित करना निहित है। इसी हित की भावना से साहित्यकार अपने साहित्य में समाज का सच्चा चित्र उकेरकर एक नई दृष्टि प्रदान करता है। दयानिधि मिश्र के अनुसार, ''साहित्य अपने मूल स्वभाव से सहकार या कहें जोड़ने और जुड़ने की प्रक्रिया को व्यक्त करता है और भारतीय दृष्टि के अनुरूप जगत के कल्याण की कामना (शिवेतरक्षति) उसमें अंतर्निहित रहती है। इस तरह मूल्य की चिंता रचना–कर्म से स्वाभाविक रूप से जुड़ी रहती है।''[1] अगर साहित्य की आधारभूमि जीवन है तो जीवन–मूल्य इसके वैभव के स्थायी आधारभूत तत्व हैं। डॉ० रामविलास शर्मा सहित्य और जीवन–मूल्यों के बीच संबंध की पुष्टि करते हुए कहते हैं– ''साहित्य तत्कालीन सामाजिक जीवन में भाग लेने, उसकी समस्याएं तय करने आदि की प्रेरणा देता है, साथ ही उसका व्यापक प्रभाव मनुष्यों के संस्कारों के निर्माण में देखा जा सकता है।''[2] उन्होंने यह भी लिखा है..... साहित्य के मूल्य जीवन–मूल्यों से ही निर्धारित होते हैं, साहित्यकार केवल उन्हें नयी भाव–मूर्तता प्रदान करके ग्राह्य और सर्वजन संवेद्य बना देता है, जिससे उसकी कृति मनुष्य की चेतना और उसके आचरण को नियंत्रित करने वाली सहज प्रवृत्तियों को अधिक संस्कृत और अपने सामाजिक परिवेश के प्रति अधिक जागरूक बनाती है– युग–युगांतर तक।''[3]

एक प्रकार से साहित्यिक वैभव के स्थायी आधारभूत तत्व जीवन–मूल्य ही होता है। साहित्य और जीवन–मूल्य के शाश्वत संबंध की पुष्टि करते हुए मुंशी प्रेमचंद ने लिखा है– ''साहित्य का प्रयोजन मनोरंजन जरूर है, पर यह मनोरंजन वह है, जिसमें हमारी कोमल और पवित्र भावनाओं को प्रोत्साहन मिले, हम में सत्य, निस्वार्थ सेवा, न्याय आदि देवत्व के जो अंश हैं वे जाग्रत हों.... मनुष्य जिस समाज में रहता है, उसमें मिलकर रहता है, जिन मनोभावों से वह अपने मेल के क्षेत्र को बढ़ा सकता है, वही सत्य है। जो वस्तुएँ भावनाओं के इस प्रवाह में बाधक होती हैं, वे सर्वथा अस्वाभाविक हैं, परंतु यदि स्वार्थ, अहंकार और ईर्ष्याओं की ये बाधाएँ न होतीं तो हमारी आत्मा के विकास को शक्ति कहाँ से मिलती? शक्ति तो संघर्ष में है। हमारा मन इन बाधाओं को परास्त करके अपने स्वाभाविक कर्म को प्राप्त करने की सदैव चेष्टा करता रहता है। इसी संघर्ष में साहित्य की उत्पत्ति होती है। यही साहित्य की उपयोगिता भी है।''[4]

चूँकि साहित्य का जन्म समाज में होता है। जीवन रूपी श्रृंखला में व्यक्ति और समाज दोनों परस्पर जुड़े हैं, जिसकी व्याख्या साहित्य करता है। युगीन यथार्थ को अनुभूत करने में साहित्यकार की पैठ व अंतर्दृष्टि विशेष महत्व रखती है। इस गहरी पैठ से ही मनुष्य व समाज की यथार्थ की पकड़ भी सरल होती जाती है। साहित्यकार जीवन की जटिलता–संश्लिष्टता के क्रम में चेतना के अनेक स्तरों से गुजरकर ही जीवन–मूल्यों एवं उसके विकास की संभावनाओं पर चिंतन करता है। युगीन विचारधाराओं, जीवन दर्शन आदि के ज्ञान बिना साहित्य में यह बदलाव संभव नहीं। डॉ० रामगोपाल सिंह के अनुसार, ''जीवन–मूल्यों के इस नए संस्कार और कल्प की गति को साहित्यकार उस समय तक अपने साहित्य में मूर्तिमत्ता नहीं दे सकता जब तक कि उसे युग की विचारधाराओं, जीवन दर्शन और जीवन के विकास के लक्ष्य और उसकी गति का ज्ञान न हो।''[5] साहित्य में मूल्य ज्यों का त्यों वर्णित नहीं किए जाते बल्कि उन्हें 'कान्ता–सम्मत' ढंग से, रमणीयता के साथ पुनर्सृजित किया जाता है। इसी कारण साहित्य में पाठक–वर्ग के जीवन की व्यापकता को गहराई से प्रभावित करने की क्षमता होती है। यूं कहें तो, साहित्य पाठकों में जीवन–मूल्यों की चेतना को जाग्रत करने, उन्हें जीवन में उतारने की प्रेरणा देने और जीवन–स्थितियों के परिष्कार एवं परिवर्तन में सहायता करता है। साहित्य के प्रतिष्ठित मूल्यों ने समाज को व्यापकता एवं अत्यंत गहराई से प्रभावित किया है जिसका प्रमाण किसी भी देश के साहित्य के इतिहास के अध्ययन में मिल सकता है। एक प्रकार से कहें तो इन्हीं प्रभावों के कारण समाज में बदलाव की प्रक्रिया तेज हो रही है। साहित्यकार जब अपने सृजन में विभिन्न विचारकों एवं चिंतकों की विचार–दृष्टियों, जीवन–दर्शन को कलात्मकता एवं रमणीयता के साथ जीवन–यथार्थ को जोड़कर भावपरक–संवेदनात्मक रचना रचता है तो इसके मूल में समाज–सुधार, देशोत्थान एवं जीवन–दर्शन के सिद्धांत एवं दर्शन का प्रतिपादन–भाव भले ही हो, किंतु उसका प्रभाव मूलतः भावपरक संवेदनात्मक एवं सृजनात्मक ही होता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक अर्थात् आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में विभिन्न कवियों व लेखकों ने जीवन–मूल्यों को केंद्र में रखकर ही साहित्यिक रचनाएँ की हैं। साहित्य देशकाल की सीमा को लांघ कर विश्व मानव–कल्याण से ही अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करता है। कबीरदास, तुलसीदास, प्रेमचंद, गोर्की, शेक्सपियर, कालिदास आदि साहित्यकारों ने देश–काल की सीमा से ऊपर उठकर विश्व मानव के कल्याण में कई रचनाएं दी हैं। रामायण, महाभारत, रामचरितमानस, गीतांजलि, गोदान आदि कृतियां भारतीय हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

प्राचीन भारतीय साहित्य में 'काव्य' शब्द का प्रयोग मिलता है, जिसे संस्कृत के आचार्यों ने साहित्य के अर्थ रूप में उल्लेख किया है। इस साहित्य का आरंभिक रूप पद्यात्मक अर्थात् काव्य ही है जो कहीं न कहीं वेद के रूप में ही देखने को मिलता है। भारत में मूल्यों के प्रमुख स्रोत में वेद का महत्वपूर्ण स्थान है। यहीं से भारतीय साहित्य का आरंभ होता है। कालान्तर में पुराण, महाकाव्य काल में रामायण और महाभारत ने इस देश में मूल्यों को प्रतिष्ठित व प्रतिपादन किया। राम का आदर्श चरित्र, सीता का पतिव्रत धर्म, हनुमान का सेवाभाव, भरत का भ्रातृप्रेम आज भारतीय समाज ही नहीं अपितु विश्व में भी अनुकरणीय है। भारतीय साहित्य में 'महाभारत' एक अनुपम रत्न है जो आकार, विशालता व प्रभाव की दृष्टि से यह विश्व साहित्य में अतुलनीय है। मूल्यबोध की दृष्टि से तो यह वर्तमान जीवन के अधिक निकट है। 'महाभारत' सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, धार्मिक, मानव–मूल्यों आदि का अनुपम धरोहर है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के इतिहास में 'रामायण' और 'महाभारत' साहित्यिक कृतियाँ ही नहीं बल्कि युगान्तकारी परिवर्तन की वाटिका है। निःसन्देह ये दोनों ग्रन्थ युगों–युगों तक मूल्यबोध के प्रेरक स्रोत रहेंगे क्योंकि इसमें मानव जीवन के विविध पक्षों व स्वरूपों का उद्घाटन हुआ है। एक प्रकार से कहें तो भारत में जिन मूल्यों को श्रेष्ठ माना गया है, उन सबका आधार ग्रन्थ महाभारत ही है। गीता में इसे समन्वय मार्ग मानकर मानव मुक्ति का प्रमुख साधन माना गया है।

इस प्रकार काव्य में जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापन की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना काव्य में जीवन–मूल्यों का निर्वहन अधिक होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने निबंध 'कविता क्या है' में कहा है– ''कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भाव सत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व हृदय हो जाता है। उसकी अश्रुधारा में जगत् की अश्रुधारा का, उसके हास–विलास में जगत् के आनंद–नृत्य का, उसके गर्जन–तर्जन में जगत् के गर्जन–तर्जन का आभास मिलता है।''[6] काव्य रचना अन्य विधाओं के अपेक्षा मानव की अतिप्राचीन प्रवृत्ति रही है। अन्य साहित्यिक विधा तो आधुनिक काल की देन है। एक प्रकार से कहें तो प्राचीन साहित्य में काव्य की तुलना में अन्य विधाओं में सृजन कर्म नगण्य होता था। आचार्य शुक्ल ने कविता को मनुष्य जाति के साथ लगी चली आने का उल्लेख करते हुए लिखा है।

''मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य–असभ्य सभी जातियों में किसी न किसी रूप में पाई जाती है। चाहे इतिहास न हो, विज्ञान न हो, दर्शन न हो, पर कविता का प्रचार अवश्य रहेगा। बात यह है कि मनुष्य अपने ही व्यापारों का ऐसा सघन और जटिल मण्डल बाँधता चला आ रहा है जिसके भीतर बँधा–बँधा वह शेष सृष्टि के साथ अपने हृदय का संबंध भूला–सा रहता है। इस परिस्थिति में मनुष्य को अपनी मनुष्यता खोने का डर बराबर रहता है। इसी से अंतः प्रकृति में मनुष्यता को समय–समय पर जगाते रहने के लिए कविता मनुष्य जाति के साथ लगी चली आ रही है और चली चलेगी। जानवरों को इसकी जरूरत नहीं।''[7]

वैसे तो हिंदी साहित्य के अंतर्गत अनेक विधाएं आती हैं जैसे– काव्य (प्रबंध काव्य अर्थात् महाकाव्य, खंडकाव्य एवं मुक्तक काव्य) नाटक और गद्य (गद्य–काव्य, उपन्यास, कहानी, निबंध, जीवनी, संस्मरण, आत्मकथा, पत्र, डायरी, यात्रा–वृतांत, रिपोर्ताज आदि) हैं। यदि साहित्य और जीवन–मूल्यों की बात करें तो इसका अभिप्राय साहित्य की सभी विधाओं से है। साहित्य की सभी रचनाओं अथवा विधाओं में उनकी अपनी शैलीगत विशिष्टता होती है जिसके अनुरूप जीवन–मूल्य प्रतिष्ठित होते हैं। साहित्य व जीवन के मूल्य में संबंध को स्पष्ट करते हुए बाबू गुलाब राय कहते हैं– ''साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्यों से भिन्न नहीं है। अतः यह बात सर्वमान्य है कि जिसका जीवन में मूल्य है उसका साहित्य में भी मूल्य है।'[8]

साहित्य और जीवन–मूल्य के अंतर्संबंध में यह कहना उचित होगा कि साहित्य के मूल्य मानव के जीवन व समाज के मूल्यों के समानांतर चलते हैं। सबसे पहले समाज में मूल्यों का निर्माण होता है, फिर साहित्यकार परिवेश के संदर्भ में स्वयं की दृष्टि के अनुसार उन मूल्यों का परीक्षण करता है। साहित्यकार इन परीक्षित मूल्यों को अपनी रचना में न केवल संजोता है, अपितु आवश्यकता के अनुरूप उन्हें संशोधित व समृद्ध भी करता है। स्पष्ट है कि मूल्य साहित्य एवं समाज के बीच तारतम्यता एवं संगति का निर्वहन करते हैं। इस प्रकार साहित्यकार के सृजन को सामाजिक जीवन के व्यावहारिक धरातल पर अर्थवत्ता प्राप्त होती है। अतः कहा जा सकता है कि साहित्य में स्थान प्राप्त युगीन मूल्य भले ही वर्गीय ही क्यों न हो, किंतु प्रत्येक महत्वपूर्ण साहित्य अपने समय के मूल्यों से अनुप्राणित व ओत–प्रोत होता है।

Dimensions of Socio Economic Development of Tribes

Asit Diwakar
Assistant Professor
Dept. of Geography

The presence of various tribes in the Indian society is our cultural heritage. The search of modern era is based on consumerism, but in the context of primitive history, study of primitive tribal is also the need of modern society. This primitive tribal tribe lives in the forests, the forest is their life and is far away from the glare of modernity. Sometimes it seems that this tribe is made for living a heady life in its wild environment.

The development of the tribal community Is the priority of the government, the cooperation of all the communities is necessary for the overall development of the country, the overall development of the country cannot be done by leaving any one community. History is witness to the fact that many human species of the world took the step of development together, out of which some human species did their development in a sophisticated way and came into the modern species. But in the modern era, many primitive castes have become extinct or are on the verge of extinction, but Indian primitive tribes have kept themselves alive even in adverse circumstances, which is the main feature of Indian tribes.

During the time of subjugation, when the British encroached on their places of residence, these simple tribals fought against the British power with their traditional weapons (arrows, bows, spears). The "Birsa Gunda" tribal community took the lead in the freedom struggle and showed their adventurous nature. These tribals and tribes have been companioning for centuries between forests, rivers, streams and wild animals. If someone encroaches on their areas, even these simple tribals get furious. These tribal communities who have been living in forests for centuries.

There is no special competition for socio-economic development among the tribes that is why there is no developmental change in this community even after centuries. This tribe is happy or prosperous only in its family and society. It seems that they do not want to meet the people of other community or society, and if any sociologist wants to study about it, then they do not know about their history or do not want to tell anything about themselves. . At present these tribes are extremely backward, poor, destitute and alienated from the mainstream.

There has always been such a huge group of farmers, Dalits, women, tribals and tribes in the Indian society, who have always been deprived of social, economic, political and government schemes and have been averse to development. At first, the government did not make any special plan for the development of these deprived groups, and if at present a plan is made to connect these groups with the main stream, then these groups are not able to take proper advantage of the government schemes.

The Government has formulated a strategy for the overall development and welfare of the tribal people across the country through various interventions which provide necessary support for education, health, sanitation, water supply, livelihood etc. to improve their economic, educational and social conditions. Takes care The bulk of the development activities are carried out through various schemes/programmes of the respective Central Ministries and State Governments, while the Ministry of Tribal Affairs supplements these initiatives by bridging important gaps.

The erstwhile Planning Commission had Issued revised guidelines during 2014 for the implementation of the Tribal Sub-Plan (TSP) by the States/UTs and Ministries/Departments of the Central Government keeping in view the overall development of the tribal people.

Government from time to time identifies loopholes in policy and implementation and makes recommendations to correct or effectively implement programs to benefit the target group.

झारखण्ड़ की राजनीति क्षेत्रिय दलों की भूमिका का विश्लेषणत्मक अध्ययन

अशीष कुमार सिंह
सहायक प्राध्यपक
राजनीतिक विभाग

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में दलीय व्यवस्था आवश्यक है, जिसमें क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि ये दल ही क्षेत्रीय मुद्दों को जोर–शोर से उठाते है और पूरे देश का ध्यान आक्रर्षित कर उसके निर्वारण के लिए प्रयासरत रहते है। भारत में क्षेत्रीय दलों का इतिहास बहुत पुराना है भारत की विविधता क्षेत्रीय दलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। पंजाब, कश्मीर, तमिलनाडु में क्रमशः अकालीदल, मुस्लिम कॉन्फ्रेंस जस्टिस पार्टी का गठन हुआ जो अपनी अलग पहचान रखती थी। भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसकी व्यवस्था जनता के द्वारा जनता के हित में बनाया जाता है।

भारत में संघीय शासन में संघ के द्वारा जो नीतियां और कार्यक्रम बनाए जाते हैं वो राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। जिसके कारण क्षेत्रीय समस्याएं था तो उपेक्षित रह जाती हैं या उस पर कम ध्यान दिया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय दलों का उदय होता है। यही कारण है कि भारत में लगभग सभी प्रांतों में क्षेत्रीय दल देखने को मिलता है। कुछ प्रांतों में क्षेत्रीय दल इतने मजबूत स्थिति में है जिसके सामने राष्ट्रीय दलों का कोई वर्चस्व नहीं है। बी. एल. फाडिया अपनी पुस्तक में 'भारतीय राजव्यवस्था और संविधान' में लिखते हैं– ''राज्यस्तरीय अथवा क्षेत्रीय दलों का अर्थ उस राजनीतिक दल से लगाया जा सकता है। जिसका प्रभाव किसी विशेष राज्य तक सीमित है। उन दलों का दृष्टिकोण राष्ट्रहित में गौण तथा राज्य क्षेत्रीय हित में अधिक होता है।'' लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह दल न तो केवल क्षेत्रीय मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित करती है बल्कि उसके समाधान के लिए प्रयासरत भी होती है। भारत में बहुदलीय व्यवस्था अपनाई गई है जिसके कारण कई क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है। राष्ट्रीय दल की संख्या तो कभी छः तो कभी सात रही, लेकिन क्षेत्रीय दलों की संख्या में बेहतासा वृद्धि होती रही हैं।

झारखंड के राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व शुरू से रहा है। यहां अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों से क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों के उम्मीदवार विजयी होते रहे हैं, जिसके कारण कोई स्थिर सरकार नहीं बन पाई। झारखंड गठन के 15 वर्षों में 10 मुख्यमंत्री बने, जिसके कारण विकास की प्रक्रिया उस गति से नहीं बढ़ पायी जिस गति से बढ़ना चाहिए, झारखंड गठन के बाद भी क्षेत्रीय दलों का विकास हुआ जो यहां की संसदीय राजनीति को प्रभावित करती है। झारखंड गठन के बाद सन 2000 ई. 2022 ईस्वी तक की जितनी भी सरकारें बनी है उन सरकारों में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव देखा गया। झारखंड के मुख्य क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों में झारखंड मुक्ति मोर्चा, ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू), झारखंड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक), जनता दल यूनाइटेड, राष्ट्रीय जनता दल, मार्क्सवादी समन्वय समिति,नवजावन संघर्ष मोर्चा, जय भारत समानता पार्टी, झारखंड दिमोश पार्टी, झारखंड पार्टी (नरेन) झारखंड पीपुल्स पार्टी, जनता पार्टी, झारखंड वनांचल कांग्रेस सदान विकास पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी, आदि पार्टियों है जो झारखंड की संसदीय राजनीति की दशा और दिशा तय कर रही हैं। इसके अलावा अन्य राज्यों के क्षेत्रीय दलों ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक, ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस, जनता दल सर्कुलर राष्ट्रीय लोकदल समाजवादी पार्टी भी झारखंड की संसदीय राजनीतिक में अपना प्रभाव रखती हैं।

झारखंड गठन के साथ ही पहली सरकार गठबंधन सरकार थी जिसमें राष्ट्रीय दल भारतीय जनता पार्टी के 33 विधायकों के साथ क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दल समता पार्टी के 5 विधायक, जनता दल के 3 विधायक, आजसू समर्पित गोमांतवादी डेमोक्रेटिक पार्टी के 2 विधायक, झारखंड वनांचल कांग्रेस के 2 विधायक, के सहयोग सरकार बनी थी। झारखंड के संसदीय राजनीति का इतिहास रहा है कि यहां अभी तक जितनी भी सरकारें बनी वह गठबंधन सरकार थी। इस गठबंधन सरकार में क्षेत्रीय दलों का ही प्रभुत्व रहा है। क्षेत्रीय दलों ने अपनी इच्छा से सरकार चलाने एवं गिराने की भूमिका में देखा गया। झारखंड की सांस्कृतिक एवं जातीय बहुलता के कारण राष्ट्रीय दलों के अलावा कई क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। ये दल झारखंड की राजनीति को प्रभावित करती हैं यही कारण है कि गठन के 22 वर्ष पूरा होने के साथ 11 मुख्यमंत्री देखने को मिले। 2005 ईस्वी में झारखंड गठन के बाद पहली बार विधानसभा चुनाव हुए। इस चुनाव भारतीय जनता पार्टी 30 सीटें, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 9 सीटें, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी 1 सीट जीती। वहीं क्षेत्रीय दलों में झारखंड मुक्ति मोर्चा के 17 सीटें जीती। जनता दल यूनाइटेड 6 सीटें, राष्ट्रीय जनता दल 7 सीटें, भाकपा माले 1 सीट ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक 2 सीट, यूनाइटेड गोमांतक डेमोक्रेटिक पार्टी 2 सीट जीतकर क्षेत्रीय दलों का महत्व झारखंड की राजनीतिक में बढ़ा दी। भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर भी सरकार का गठन नहीं कर पायी और शिबू सोरेन के नेतृत्व में क्षेत्रीय दलों की सरकार बनी। यह सरकार भी अपनी कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी और मात्र 10 दिनों में आपसी मतभेद के कारण गिर गयी। पुनः अर्जुन मुंडा के नेतृत्व में क्षेत्रीय दलों के सहयोग से सरकार का गठन किया गया क्षेत्रीय दलों का प्रभाव ही था कि अर्जुन मुंडा सरकार भी मात्र 6 माह 7 दिन में गिर गयी और भारत के संसदीय इतिहास में दूसरी बार किसी राज्य में निर्दलीय सदस्य को मुख्यमंत्री बनाया गया। मधु कोड़ा (निर्दलीय) ने कांग्रेस एवं अन्य क्षेत्रीय दलों के सहयोग से नई सरकार के गठन की, लेकिन मधु कोड़ा सरकार ने भी अपना कार्यकाल नहीं किया। झामुमो के समर्थन वापसी के कारण अगस्त 2008 ईस्वी को इसकी सरकार गिर गयी। पुनः शिबू सोरेन के नेतृत्व में 27 अगस्त 2008 ईस्वी को एक नई सरकार का गठन किया गया जो 18 जनवरी 2009 ईस्वी को गिर गई और राज्य में पहली बार राष्ट्रपति शासन लागू किया गया। राष्ट्रपति शासन के समय ही 2009 ईस्वी में राज्य में विधानसभा के चुनाव हुए इस चुनाव में भी क्षेत्रीय दलों के प्रभाव को देखा जा सकता है। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने 18 सीटें, आजसू 5 सीटें, भाकपा माले 1 सीट, जय भारत समानता पार्टी 1 सीट, जदयू 2 सीट, झारखंड विकास मोर्चा 11 सीट, राष्ट्रीय जनता दल 5 सीट, जीती। 2009 ईस्वी के चुनाव परिणाम ने झारखंड के संसदीय राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों की महत्व को बढ़ा दिया।

इन क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों ने कुल सीटों का 58% सीटों पर विजय हासिल की और झारखंड की राजनीति को अपने नीतियों एवं सिद्धांतों पर चलने का विवश किया। इस चुनाव के बाद जो भी सरकार आई उनमें क्षेत्रीय दलों प्रभाव को देखा जा सकता है। पुनः 2011 ईस्वी में विधानसभा चुनाव हुए। इस चुनाव में भी क्षेत्रीय दलों के प्रभाव को देखा जा सकता है झामुमो 17 सीट जीती तो आजसू ने 5 सीटें, भाकपा माले 1 सीट, झारखंड विकास मोर्चा 8 सीट, इस प्रकार क्षेत्रीय दलों ने कुल 43% सीटों पर विजय हासिल किया। झारखंड के राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व शुरू से ही रहा है। यहां अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों से क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों के उम्मीदवार विजय होते रहें, जिसके कारण कोई स्थिर सरकार नहीं बन पायी। झारखंड गठन के 15 वर्षों में 10 मुख्यमंत्री बने जिसके कारण विकास की प्रक्रिया उस गति से नहीं बढ़ पाई जिस गति से बढ़ने चाहिए।

माँ

जब अकेला रहा तो उसकी याद आयी,

अँधेरे में था तो उसकी याद आयी।

जब भूख लगी तो उसकी याद आयी

नींद नहीं आयी तो उसकी याद आयी।

सोचने में कितनी आसान लगती थी ये जिंदगी

जब खुद से जीना सीखा तो उसकी याद आयी।

तभी भी लगा की माँ इतनी मतलब कैसे हो सकती है

हमसे भी ज्यादा हमारे लिए कैसे सोच सकती है।

लेकिन सच तो ये है कि वो माँ ही होती है

जो हमारा पेट भरकर खुद भूखा सोती है।

Abhishek Kumar
Semester-II
Hons. Economics

सारे जहां सें

कभीं अपनी हंसी पर आता हैं गुस्सा।

कभीं सारें जहा की हसाने को दिल करता हैं।।

कभीं छुपा लेतें हैं गम की दिल कें किसीं कोनें मे।

कभीं किसी को सब कुछ सुनानें का दिल करता हैं।।

कभीं रोते नहीं लाख दुख आने पर भी।

और कभीं यू ही आंसू बहाने कों दिल करता हैं।

कभीं अच्छा सा लगता हैं आजाद घूमना, लेकिन

कभीं किसी की बाहो मे सिमट जाने को दिल करता हैं।।

कभीं कभीं सोचते हैं नया हों कुछ जिन्दगी मे।

और कभीं बस ऐसें ही जियें जाने को दिल करता हैं।।

Rakhi Kumari
Semester-II
Hons.-English

गुजरे जमाने

ना जाने क्यों अब लोगों के चेहरे शर्म से गुलाबी नहीं होते ना जाने इंसान अब क्यों नस्तमौला मिजाज नहीं होते। सुना है पहले दिल की बात समझ लिया करते थें। गले लगते ही दोस्त हलात समझ लिया करते थे। तब न फेसबुक और न स्मार्टफोन ना ही व्हाट्सएप और ना इंटरनेट की सुविधा थी। लोग बस चिट्ठी से एक दुसरे के जज्बात समझ लिया करते थे।

जब एक भाई दुसरे भाई से समाधान कहाँ पूछता है। बेटा बाप से उलझनों का निदान कहां पूछता है। बेटी नहीं पूछती माँ से गृहस्थी के सलीके, अब गुरू के चरणों में बैठ कर ज्ञान की परिभाषा कौन सिखता है। परियों की बातें अब किसकों भाती है, अपनों की याद अब किसको रूलाती है।

Vikash Paswan
Semester-IV
Hons. -Hindi

जमीन पर जन्नत

जन्नत का जमीं पर ही निर्माण कर लिया
जिस जिस ने भी खुद को इन्सान कर लिया
उठाकर किसी गरीब लाचार को जमी से
खुद को जमीं से ऊंचा आसमां कर लिया
आ मानव तुझे तो बनाकर भेजा था भगवान् जमीं का
क्यू तूनें खुद को शैंतान सा बेईमान कर लिया

कोंसते रहते है लोग हर वक्त दूसरो की शौहरतो को
अच्छें भले जन्नत से जिस्म को शम्शान कर लिया

पाल लिया समझो उसने एक नर्क अपनें भीतर
जिस जिस ने भी अपनी कामयाबियो पर गुमान कर लिया

करकें हर अपने पराए की दिल से मदद
मुश्किल जीवन को हमनें बडा आसान कर लिया

जब भी करना चाहा बेदर्द तकदीर ने हम पर वार
हमनें किसी मासूम बालक सा खुद को नादां कर लिया

हटाता गया मालिक उसकी राह से हर कान्टे को
जिस जिस ने खुद को उसकी खातिर परेशान कर लिया

करकें किसी संगदिल सनम से इश्क का इजहार
हमनें ठीक ठाक चलती सांसों को तूफान कर लिया

नहीं बैंठती सरस्वती माँ फिर कभी उसकी जिव्हा पर
जिस जिस ने अ नीरज लिखने पर अभिमान कर लिया

Poonam Kumari
Semester-II
Hons. -English

आतंकवाद

सजती है बाजार जहाँ
गोलियों बारूदों की,
कौड़ियो के मोल बिकते
जान–ईमान इंसानो के।
इंसानियत की छाँव जहाँ
खो रही उजालों में,
हो रहा वह राष्ट्र जवां
नकाबों के अँधियारो में।
आतंकी हमलों तले
वीरों ने सर कटा दिए,
माँ का आँचल कफन बना
अर्थी को पिता का कंधा मिला।
कितनी माँगे उजड़ गई
घर का दीपक बुझ गया,
माँ की गोद सूनी हुई
पिता का सहारा छीन गया।
मन की आँखों से देख जरा ऐ आतंकी
कद तेरा कितना छोटा है,
मरी हुई है जमीर तुम्हारी
मर गया धर्म–ईमान है।
हर साँसे बद्दुआ दे रही
जर्रा–जर्रा तुम्हे कोश रहा ,
इन मौतों के सिलसिले को जरा
तू दो पल ठहरकर सोच जरा
तूने अपनी मासूमियत खोई
तूने खोया अपना ईमान
इंसानों को मारने वाले कैसे हो सकता है इन्सान
ऐ आतंकी सोच जरा।।

Veena Kumari
Semester-VI
Hons. -History

मजबूत हौसला

कमजोर दिल हैं वो,

जो सहारों की तलाश करते हैं,

बैसाखियाँ बना बहानों की

मदद की फरियाद करते हैं।

टूट कर बिखर जाते हैं

अकसर ठोकरों से,

जो बता खुद को मजलूम

बर्बाद किया करते हैं।

अगर जीना है शान से

तो सीना तान ले,

कर मजबूत हौंसला

काबिलियत अपनी पहचान ले।

ऊंचाइयों पर जाने वालों का

ये दुनिया इस्तकबाल करती है,

पहुँच जाए जो बुलंदियो पर

ए "गुमनाम"

ये झुक–झुक कर

सलाम करती है।

Ajeet Kumar Yadav
Semester-III
Hons.-Geography

Education

Education is said to be a need,
Though people feel it is not a necessity,
There is an abundance of advantage in being read,
Still men feel it is not of no use in reality.
A value behind closed doors,
There is much to be gathered thereon,
Even used in all dimensions
This is well evident and seen.
Education is the main,
Though there could be pain,
Still no pain no gain,
Even a lot to get in the rain.
Education should not just depreciate
Though it is what no man can alienate
It is of use everywhere,
And also of help anywhere.
Education exhales knowledge,
It could be refitting,
Assuredly it gives an edge,
And a very one that is profiting.
With education there cannot be shambles,
It never exhales sham,
Not a one of casualties
Why don't we embrace it a stay calm?

Neha Kumari
Semester-III
Hons.-English

हौसला

रख हौसला वो मन्जर भी आएगा,
प्यासे के पास चलकर,
समुंदर भी आएगा।
थक कर न बैठ,
ए मंजिल के मुसाफिर,
मंजिल भी मिलेगी और
मिलने का मजा भी आयेगा।
नित नये सपने तू देख
पूरा करने का उन्हें रख हौसला,
अगर लक्ष्य तेरे है बुलंद
तो सपने भी सच होंगे,
और सच होने का मजा भी आएगा।
दूर कर अपने मन का अँधेरा
चल उठ अपनी पहचान बना,
अंधेरी राहों में जलाकर दिया
तू मुश्किलों को आसान बना।
आगे तुझमें है कुछ करने की शक्ति तो,
तुझे वो पहचान भी मिलेगी,
थक कर न बैठ
ए मंजिल के मुसाफिर
मंजिल भी मिलेगी
और मिलने का मजा भी आयेगा।

Khushboo Kumari
Semester-II
Hons.-Political Sc.

Take Your Troubles

Take your troubles
Best you can.
Stand right up
And pay the man.
Face I m just
As though you knew
You were coming
Safely through.
Blows will hurt
And bruise you, maybe,
But don't whimper
Like a baby.
Stand right up
And be a man.
Meet your troubles
Best you can.

Muskan Kumari
Semester-II
Hons.- History

जिंदगी

जिन्दगी, जिन्दगी है, जिन्दादिली हैं,
जिन्दगी ईश्वर द्वारा रचित एक कृति हैं ,
जिन्दगी कभीं कामदेव तो कभीं रति हैं,
यह वह कायनात हैं जो ,
हमको किस्मत से मिलीं हैं ।।

जिन्दगी पानी हैं कभीं प्यास हैं ,
टूटती आखरी सांस मे भी,
छुपीं होती एक आस हैं,
जिन्दगी एक मस्त ब्यार हैं ,
जिसकी खुशबू दिलो में घुली हैं।।

जिन्दगी धूप हैं तो कही पर छाव हैं ,
कही पर गतिमान हैं जिन्दगी ,
तो कही पर पडाव हैं ,
जिन्दगी एक पहेली हैं,
जिसमें ख्वाहिशे अनगिनत पलीं हैं।।

जिन्दगी एक खूबसूरत गुलाब हैं,
लेकनि इसमे कांटे बेहिसाब हैं ,
जिन्दगी प्रेम हैं, त्याग हैं,
जिन्दगी एक छुईंमुई सी कली हैं ,
कही पूरीं तो कही आधी खलिी हैं।।

Nisha Kumari
Semester-VI
Hons.-Hindi

The Road Not Taken

Two road diverged in a yellow wood,

And sorry I could not travel both

And be one traveler, long I stood

And looked down one as far as I could

To where it bent in the undergrowth;

Then took the other, as just as fair,

And having perhaps the better claim

Because it was grassy and wanted wear,

Though as for that the passing there

Had worn them really about the same

And both that morning equally lay

In leaves no step had trodden black

Oh, I kept the first for another day

Yet knowing how way leads on to way

I doubted if I should ever come back.

I shall be telling this with a sign

Somewhere ages and ages hence:

Two roads diverges in a wood, and I,

I took the one less traveled by,

And that has made all the difference.

Anjali Kumari
Semester-III
Hons-History

पृथ्वी के संघर्ष भरी कहानी

एक सोनपूर नामक गाँव मे पृथ्वी नामक एक लड़का रहता था। उसकी माता का नाम शांति शर्मा तथा पिता का नाम महेश शर्मा था। उसके दो भाई तथा एक बहन थी तीनों पृथ्वी से छोटे थे। पृथ्वी के पिता एक मजदूर थे तथा माता युध बेचती थी। उसके पिता शराब पीते थे, जिसके कारण अकसर उसके घर में तनाव का महौल बना रहता, था। उसके पिता की सारी कमाई शराब और जुए में जाता था और घर का सारा खर्च माता पे बना रहता था। पृथ्वी पढ़ने में बहुत तेज था। माँ ने जैसे तैसे कर के उसे पढ़ाया चूँकि घर की सारी जिम्मेवारी चाहे को पृथ्वी की पढ़ाची की हो या उसके भाई बदन की पढ़ाई की उसके माँ के ऊपर ही था। पृथ्वी की पढाई गाँव के सरकारी स्कूल से हुई। अब पृथ्वी 10वीं की पढाई कर रहा था कुछ ही दिनों मे उसका परीक्षा हुआ और कुछ दृप्तों मे रिजल्ट भी आ गया। जिसमें पृथ्वी मे ने अपने स्कूल मे टॉप किया। यह बात उसके पूरे गाँव में फैली। एक दिन जब पृथ्वी के पिता महेश जब शराब पीकर घर वापस आ रहे थे तभी उसे एक आदमी ने कहा कि, अरे, महेश मुँह मीठा करवाओगे देवी कि नही तो महेश ने नशे की हालात में बगेला किस बात का मुँह मीठा मैं मर गया हूँ क्या, तो उस आदमी ने कहा तेरे बेटे ने पूरे स्कूल में टॉप किया है ये बात सुनते ही महेश के कान खड़े के खडे रह गये ट्री और उसके आंखों से आँसू आने लगे क्योंकि जब महेश छोटा था वो भी पढने मे बहुत तेज था पर पैसो की वजह से वो पढ़ नहीं पाया और उसने शराब पीना शुरू कर दिया लेकिन जब उसने यह उसने यह बात सुनी तो उसके मन मैं एक ख्याल नाम हम एक का घर आया कि अब तक जो हुआ सो हुआ लेकिन वह आजू के बाद शराब नही पीयेगा और मन में ठान लिया कि अब चाहे ज हो जाए वह अपने बेटे को खुब पढ़ाएगा घर जाते ही उसका नशा उतर गया था) उसने अपनी पत्नी शांती से कहा शांती हम अपने पृथ्वी का नाम एक अच्छे कॉलेज में करवाएगे और उसे पढ़ाएंगें तो शांति ने कहा यहाँ मैं चला नही पाती और आप कहते हैं पृथ्वी का एक अच्छे कॉलेज मे लिखवाएगे सिर्फ कहना काफी नहीं होता उसके लिए पैसे लगते है आप तो अपना सारा पैसा शराब और जुए में उड़ाते है तो मैं अकेली क्या करूँगी। शांती की बात पर महेश बोलता है, आज से मैं शराब नही पीऊगा ज्यादा मेहनत करूँगा लेकिन अपने बेटे को पढाऊँगा। अगले दिन सुबह शांति और महेश पृथ्वी को लेकर कॉलेज में जाते है और उसका नाम दर्ज करवा देते है। देखते ही देखते 5 महीने बीत गये एक दिन बात है बारिश का मौसम था पृथ्वी के पिता तबीयत तोडी खराब थी। बाहर तेज बारिश हो रही होती है फिर भी उसके पिताजी काम पर चले जाते है बारिश तेज होने कारण महेश भिंग जाता है और उसी तरह काम करता है। घर आने पर उसकी तबीयत और खराब हो जाती है बहुत इलाज पर भी तबीयत ठीक नही हो पाता है चूंकि बुखार सिर मे चला जाता है। 14 दिनों तक इलाज चलता है और अंत में 15 वें दिन पृथ्वी के पिता की मृत्यु हो जाती है। पिता की मृत्यु के बाद पृथ्वी पूरी तरह से उदास हो जाता है माँ भी बहुत उदास रहती थी पृथ्वी की पढ़ाई रुक जाती है। पिताजी के इलाज के लिए इन्होंने बहुत से कर्जे लिये होते हैं। फिर भी पृथ्वी की माँ एक दिन पृथ्वी से कहती है कि बेटे तुम जाओ पढने मैं सब घर पर संभाल लुंगी। पृथ्वी चला जाता है। पृथ्वी के 6 महीने की पढाई पूरी हो गई थी पर 11,वी 12 जी की डेढ साल की पढाई अभी बाकी थी। पृथ्वी के बारे मे जान कर उसके कॉलेज में फीस माफ कर दी जाती है पृथ्वी पूरी मेहनत करता है और इंटर (12जी) की परीक्षा मे भी वह टॉप करता है और इस बार वह state topper होता है। State topper होने की वजह से उसका ग्रेजुएशन में फ्री में नामंकन होता है। वह ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी कर गांव जाता है और वहीं से B.Ed की पढाई करता है इसी बीच वह Competition की तैयारी करता है एक बार उसका रिजल्ट खराब हो जाता है कुछ गडबडी के कारण उसका सलेक्सन नहीं हो पाता है वह लगातार कोशिश करता अब उसके बीएड की पढाई पूरी हो जाती जनरल अब वह गाँव में ही एक स्कूल खोलता है। चूँकि ग्रेजुएशन तथा B.Ed की तैयारी के दौरान

भी छोटे बच्चों को पढखता था और B.Ed हों जाने पर उसने ऐसा फैसला लिया यह फैसला बहुत बड़ा था। उसने स्कूल खोलने के लिये गाँव की जमीन को गिरवी रखा कर। धीरे धीरे उसका स्कूल चला चल पड़ा और उसने सारे कर्जे भी चुका दिये। स्कूल खोलने के बाद भी पृथ्वी ने Competition की तैयारी नही छोड़ी। अंत मे एक दिन उसका रिजल्ट हो गया। चूँकि उसके पापा का सपना था कि वों रेलवे जोब करें और उसका सेलेक्शन रेलवे में ही हुआ। अब उसके गाँव के स्कूल में उसके भाई–बहन पढाते है पृथ्वी ने सिर्फ अपनी ही पढ़ाई पूरी नहीं की बल्कि अपने साथ अपने भाई–बहनों को भी पढ़ाया। आज भी जब गाँव मे कोई बच्चा नही पढता तो उसे पृथ्वी की कहानी बताई जाती है।

प्रिया कुमारी
रोल नं.–369
सेमेस्टर–IV

युवाओं को गांधीवादी सिद्धांत अपनाने की जरूरत : डॉ सु

सरिया कॉलेज में कैरम प्रतियोगिता का आयोजन

गिरिडीह भास्कर 04-05-2023

सरिया कॉलेज के लूडो प्रति में पप्पू पंडित बना विजेता

गिरिडीह भास्कर 12-07-2022

बढ़ती जनसंख्या को रोकने के लिए जागरूकता फैलाना जरूरी: प्रो. अरुण

योग अभ्यास एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

गिरिडीह भास्कर 05-07-2022

कॉलेज में छात्र-छात्राओं ने किया पौधरोपण

संक्षिप्त समाचार

शतरंज प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

गिरिडीह भास्कर 27-11-2022

अनुमंडल कार्यालय में अधिकारियों ने ली शपथ ,सरिया कॉलेज में संगोष्ठी

विधायक के सम्मान में आयोजित की गई समारोह

कैंपस/गिरिडीह

प्रभात खबर

विद्यार्थियों को पुस्तक से दोस्ती करनी चाहिए : विनोद सिंह

युवाओं को गांधीवादी सिद्धांत अपनाने की जरूरत : डॉ सुरेंद्र

गिरिडीह भास्कर 27-11-202

अनुमंडल कार्यालय में अधिकारियों ने ली शपथ ,सरिया कॉलेज में संगोष्ठी

गिरिडीह भास्कर 06-06-2022

गिरिडीह

सरिया कॉलेज में अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित

पर्यावरण की सुरक्षा और सेहत की रक्षा रहने के लिए चलाएं साइकिल

चुनाव को प्रभावित करने वाले कारक के बारे में पूछे सवाल

सरिया कॉलेज में लूडो प्रतियोगिता

Seminar Hall

College Campus

Science Lab

Geography Lab

Play Ground

Smart Class

Water Filter

Bus

CC TV Camera

SARIYA COLLEGE, SURIYA

GIRIDIH, JHARKHAND

PERMANENTLY AFFILIATED TO VINOBA BHAVE UNIVERSITY, HAZARIBAG

REG. UNDER 2(F) AND 12(B) OF U.G.C. ACT

Sariyacollege1984@gmail.com

www.sariyacollege.ac.in